ज़बाने रिसालत से निकली हुयीं सब,
हैं मक़्बूल बे शक, ये सारी दुआयें
ज़बानें हिलेंगी, मुरादें मिलेंगी,
" ब क़ैदे शराएत " जो मांगे दुआयें

ज़बान हिली मुराद मिली

दुआ के ज़रिये मुरादें पाइये

जमा व तर्तीब
हाजी शकील अहमद साहब
और अहबाबे हिरा

मोमिन की मुरादें

ईमान की बक़ा, आमाले नबवी पर दवाम, कामिल इख़्लास अल्लाह की रज़ा व ख़ुशनूदी, नेक सालेह औलाद, हलाल और बरकत वाली रोज़ी, घर की वुसअ़त, ज़ाहिरी और बातिनी बीमारियों से बचाव, दुनिया में चैन ओ सुकून, नफ्स ओ शैतान और हर तरह के दुश्मनों से हिफाज़त, मरने के बाद बिला हिसाब व किताब जन्नत।

इन शाअल्लाह

ये किताब इन तमाम मुरादों की तकमील का ज़रीया बनेगी

अज़

हज़रत हाजी शकील अहमद साहब
मद्द ज़िल्लुहुल आली पनवेल, मुंबई

तफ्सीलात

किताब का नाम	:	ज़बान हिली मुराद मिली
मुरत्तिब	:	हज़रत हाजी शकील अहमद साहब
मुआविनीन	:	अहबाबे हिरा पब्लिकेशन
तादादे इशाअत	:	एक हज़ार (१०००)
बारे इशाअत	:	अव्वल
सने इशाअत	:	**२०१७** ई. स. १४३८ हिजरी
क़ीमत	:	५०/- रु.
नाशिर	:	हिरा पब्लिकेशन, प्लॉट नं. १८,शॉप नं. १ & २ बुश् रा पार्क, पनवेल, ४१०२०६ फ़ोन नं ०९८९२९१५०२१

Emai: hirapublication@gmail.com
Website: www.shariat.info

मिलने का पता
इदारा - ए - इस्लामियात
(२६ मुहम्मद अली रोड,मुंबई-३)
फ़ोन नं. :9892915021

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

हिरा पब्लिकेशन

तआरुफ़,मक़ासिद,सरगर्मियां

* "हिरा पब्लिकेशन"एक ग़ैर तिजारती दीनी इदारा है,जो किसी की ज़ाती मिल्क नहीं, बल्के ये इदारा वक्फ़ लिल्लाह है,जिस का मक्सद ये है कि:

* उलमा-ए-हक़ की मोटी मोटी किताबों से उम्मत की दीनी ज़रूरत के मुताबिक़ छोटे छोटे किताबचे तैयार किए जाएं,ताकि हर एक के लिए ख़रीदना और बेचना आसान हो।

* उम्मत की दीनी ज़रूरत के मुताबिक़ आम फ़हम किताबें मुख़्तलिफ़ ज़बानों छापी जाएं, ताके दीनी बेदारी के साथ साथ,दीन के तमाम शोबों का इल्म हासिल करना भी हर एक के लिए आसान हो सके।

"हिरा की किताबें तबाअ़त के आला मेअ़्यार के मुताबिक़, उम्दा काग़ज़ और ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत टाइटल के साथ छापी जाती हैं, ताकि दीनी किताबों का बातिनी और ज़ाहिरी हुस्न दोनों बाक़ी रहें।

अल्लाह का शुक्र है के "हिरा पब्लिकेशन" की किताबें अ़वाम ख़्वास में पसंदीदगी की निगाह से देखी जा रही हैं। मेअ़यारी छपाई की वजह से किताबें कुछ महंगी तो ज़रूर होती हैं, मगर अह्ले ज़ौक़ पसंद करते हैं और अह्ले दिल दुआयें देते हैं।

गुज़ारिश है कि आप भी "हिरा" की किताबें ख़रीदें, ख़ूद पढ़ें, उ़लमा ए किराम और पढ़ने वाले दोस्त अह्बाब को हदिया दें। अल्लाह तआला इदारे को हर शर से बचाकर हर तरह की तरक़्क़ियात से नवाज़े और तमाम मुआविनीन के लिए दुनिया व आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

अह्बाबे हिरा

अपनी बात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम। अम्मा बाद!

तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए है,वो किसी का मुहताज नहीं,अकेला है कोई उसका मुशीर नहीं,वो नफे नुक़्सान का मालिक है,उस ने सारी काएनात को अपने दस्ते कुदरत से पैदा किया,और इन्सान को अपनी तमाम मख़्लूकात में सब से अफ़ज़ल बनाया,और क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माया:"लक़द ख़लक़्नल इन्सान फ़ी अह्सनि तक़्वीम" के बे शक हम ने इन्सान को बेहतरीन सांचे में ढालकर पैदा किया है।

(तौज़ीहुल कुरआन)

बनाने वाले की निगाह में जो चीज़ सब से अहम् होती है उससे मुहब्बत भी ज़्यादा होती है और उसकी हिफाज़त व बाक़ी रखने का सामान भी ज़्यादा करता है।

इंसानों से इसी मुहब्बत की वजह से,अल्लाह पाक ने अम्बिया और रसूलो का सिलसिला शुरू फ़र्माया।चुनांचे हर ज़माने में अम्बिया आए और अपनी उम्मतों को ऐसी बातें बतलाते रहें,जिन पर अ़मल करके इन्सान दुनिया व आख़िरत की भलाइयां हा़सिल करे और हर क़िस्म के शर व फ़ित्ने से महफ़ूज़ हो जाए।इस दुनिया में भी चैन सुकून के साथ रहे और मरने के बाद भी हमेशा की जन्नत में ऐ़श करें।

फिर अल्लाह पाक ने जब अम्बिया अ़लै. का सिलसिला ख़त्म फरमाने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क़्यामत तक आनेवाली तमाम नस्ले इंसानी के लिए नबी बनाकर उनकी ह़िफाज़त व बक़ा के लिए कुरआने पाक,आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अदाओं और दुआओं को ज़रीआ़ बनाया।इस किताब में लिखी हुई दुआएं और आमाल,कुरआन व हदीस और बुजुर्गों के मुजर्र-बात में से माख़ूज़ हैं,जो दीन व दुनिया के मनाफेअ़,हर तरह के शर व फ़ित्ने से ह़िफाज़त, रूहानी और जिस्मानी बीमारियों के इ़लाज के

अ़लावा और बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल हैं। वक़्त और हालात के ऐतेबार से जब जैसी ज़रूरत हो, दुआ की क़बूलियत की शराएत को पूरा करते हुए, फ़राइज़ का एहतेमाम और यक़ीने कामिल के साथ इन दुआओं को मांगिए और अपनी मुरादें पाइए। इन शाअल्लाह आप ख़ुद महसूस करेंगे कि "ज़बान हिली मुराद मिली" अल्हम्दुलिल्लाह बहुत कम अरसे में इस किताब के मुतअद्दिद एडिशन मंज़रे आम पर आए और ज़ाहिरी व बातिनी ख़ूबियों की पज़ीराई के साथ मक्बूले ख़ास व आम हुए कुछ इज़ाफे और तरमीम के साथ नया एडिशन आप के हाथों में है अल्लाह पाक इस किताब को क़बूल फरमाए, मुआविनीन को जज़ाए ख़ैर अ़ता फरमाए और हम सब को और पूरी उम्मत को इस किताब से नफा उठाने की तौफीक़ अ़ता फरमाए। (आमीन)

शकील अह़मद,

पनवेल,
नई मुंम्बई

इस किताब में चार हिस्से हैं

1 पहला ह़िस्सा

ईमान व आमाल और आख़िरत की कामियाबी से मुतअ़ल्लिक़ दुआऐं

2 दूसरा ह़िस्सा

दुन्यवी मनाफेअ़ और मक़ासिद में कामियाबी से मुतअ़ल्लिक दुआऐं

3 तीसरा ह़िस्सा

जिस्मानी अमराज़ का दुआओं के ज़रिए इलाज

4 चौथा ह़िस्सा

हर तरह के इंसानी व जिन्नाती शुरूर व फितन और मुसीबत व परेशानी से ह़िफाज़त की दुआऐं

फ़िहरिस्ते मज़ामीन

चौथा हिस्सा
जिस्मानी बीमारियों का इलाज

या अल्लाह! आफ़ियत के साथ हक़ दिखलाइए, हक़ समझाइए, हक़ पे चलाइए, हक़ पे जमाइए, हक़ की हिफ़ाज़त और उसके फैलाने के लिए हमें क़बूल फरमाइए और अहले हक़ के साथ हमारा हश्र फरमाइए।

पहला हिस्सा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम ।
अम्मा बाद !

ईमान व आमाल और आख़िरत की कामियाबी से मुतअल्लिक़ दुआऐं

इस्मे आज़म

(जिस की बरकत से दुआ ज़रूर क़बूल होती है)

"ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज्ज़ालिमीन" (सूर-ए-अम्बिया,८७)

हज़रत साद बिन वक्क़ास रज़ि. फरमाते हैं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया कि वो दुआ जो हज़रत ज़ुन्नून (युनुस) अलै.ने मछली के पेट में पढ़ी थी कोई मुसलमान इस दुआ के ज़रिये दुआ मांगेगा, अल्लाह तआला उसकी दुआ ज़रूर क़बूल फ़रमायेंगे। (हाकिम)

इस आयत को उ़लमा ने"इस्मे आज़म" लिखा है,यानी इसके साथ दुआ ज़रूर क़बूल होगी। इसलिए अपनी दुआओं में इस्मे आज़म का एह्तेमाम करना चाहिए।

मुस्तजाबुद्दअ़वात (वो लोग जिनकी दुआ क़बूल होती है) बनने की दुआ

ह़दीसे पाक में है के जो आदमी २५ या २७ मर्तबा तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिए ये दुआ मांगेगा, अल्लाह् तआ़ला के नज़दीक मुस्तजाबुद्दअ़वात लोगों में शामिल हो जाएगा।जिनकी दुआओं की वजह् से ज़मीन वालों को रोज़ी दी जाती है। (तबरानी)

दुआ ये है:"अल्लाहुम्मग़्फिरली व लिल्मुअ्मिनीन वलमुअ्मिनात वल् मुस्लिमीन वल् मुस्लिमात"।

कुरआने करीम की सब से जामेअ दुआ

"रब्बना आतिना फ़िद्दुनया ह़सनतंव्व फ़िल् आख़िरति ह़सनतंव्व क़िना अ़ज़ाब न्नार"।

(सूर -ए-बक़रा)

ये दुआ दुनिया व आख़िरत की भलाई के लिए कुरआने करीम की सब से जामे दुआ है।हज़रत अनस रज़ि.फ़रमाते हैं के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी हर दुआ में इसको माँगा करते थे और ख़ुद हज़रत अनस रज़ि.जब भी अल्लाह तआला से दुआ करते तो इस दुआ को ज़रूर मांगते। (अल अज़्कार)

हदीस शरीफ की सब से जामेअ दुआ

हज़रत अबू उमामा रज़ि.ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया के या रसूलल्लाह!आप ने बहुत सी दुआएं बता दी हैं और सारी दुआएं याद नहीं रहतीं,कोई ऐसी मुख़्तसर दुआ बता दीजिए जो सब दुआओं को शामिल हो जाएं,इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये दुआ तालीम फर्माई:"अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक मिन् ख़ैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुं सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व नऊज़ू बिक मिन् शर्रि मस्तआज़ मिन्हु नबि-य्युक मुहम्मदुं सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अन्तल मुस्तआनु व अलैकल बलागु वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह"। (तिर्मिज़ी)

शिर्क से मुकम्मल ह़िफ़ाज़त

ह़ज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :शिर्क मेरी उम्मत में काले पत्थर पर च्यूंटी की रफ़्तार से भी ज़्यादा पोशीदा है। ये सुनकर ह़ज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि.घबरा गए और अ़र्ज़ किया के इससे निकलने का रास्ता क्या है? नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:क्या मै तुम्हें ऐसी दुआ़ ना बतला दूँ के जब तुम उसे पढ़ लोगे तो छोटे शिर्क और बड़े शिर्क से नजात पा जाओगे। ह़ज़रत अबू बकर रज़ि.ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ज़रूर बताइए। हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

ये दुआ़ माँगा करो:"अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक अन् उशरिक बिक व अन अअ़्लमु व अस्तग़्फ़िरुक लिमा ला अअ़्लमु"। (कंज़ुल उम्माल)

नफ़्स के शर से हिफ़ाज़त

जिस शख़्स का नफ़्स उसके क़ाबू में ना हो तो वो सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर "या मुमीतु"पढ़ते पढ़ते सो जाए,इन शाअल्लाह उसका नफ़्स मुतीअ हो जाएगा। (हिस्ने हसीन)

इल्म में तरक़्क़ी और ज़ेहन में कुशादगी

"रब्बिशरह़ली स़दरी व यस्सिर ली अम्री वह़्लुल उक़दत म्मिल्लिसानी यफ़्क़ह़ू क़ौ ली "

(सूर-ए -ताहा)

इल्म में तरक़्क़ी और ज़ेहन की कुशादगी के लिए हर रोज़ नमाज़े सुबह़ के बाद बीस बार पढ़ा करे

(आमाले कुरआनी)

ह़क़ और बातिल में तमीज़ की दुआ

"अल्लाहुम्म अरिनल् ह़क्क़ ह़क्क़ं व्वर्ज़ुक़्न त्तिबाअह़, व अरिनल् बातिल बातिलं व्वर्ज़ुक़्न ज्तिनाबह़"। (तिर्मिज़ी)

हक़ और बातिल की जंग शुरू से चल रही है,अहले बातिल की हमेशा ये कोशिश रही है के हक़ और अहले हक़ को मिटा दें,या जिस क़द्र नुक़्सान पहुंचा सकते हो पहुंचाए।उनकी एक खास तदबीर मुसलमानों के लिबास में इस्लाम के नाम पर नई नई बातें पैदा करके उम्मत के अक़ाइद को बिगाड़ना और सुन्नतों के बजाए रस्मों को आम करना है। हदीसे पाक का मफहूम है के मेरी उम्मत के बहत्तर फ़िरके होंगे,हक़ पर एक ही होगा। इसलिए अहले बातिल जिस जमात की शक्ल में भी दीन पेश करते हैं उस जमात को हक़ बताने के लिए उम्मत के सामने ऐसी बातें लातें हैं जिन से धोका हो जाता है के ये हक़ वालें हैं, इसलिए इस धोके से बचने के लिए इस दुआ का एहतेमाम करना चाहिए।नीज़ सूर-ए-कहफ़ की शुरू और अखीर की दस-दस आयतें पढ़ते रहिए इन शाअल्लाह दज्जाली फित्ने से हिफाज़त होगी।

ग़ैरुल्लाह को दिल से निकालने की दुआ

"अल्लाहुम्मक्शिफ़ फ़ी क़ल्बी रजाअक वक्तअ़ रजाई अ़म्मन् सिवाक,फला अरजू अहदन् ग़ैरक"

(उम्दतुल गा़बह)

दुनिया की सारी चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने इंसानों के लिए पैदा की है और इन्सान का दिल अपने लिए बनाया है। इंसान का दिल अल्लाह पाक की मुहब्बत का घर है। क़यामत के दिन अल्लाह पाक गुनाहों से पाक और अपनी मुहब्बत से लबरेज़ दिल का मुतालबा फ़रमाएंगे इसलिए अपने दिल को ऐसा बनाने के लिए अहले दिल यानी अल्लाह वालों से तअ़ल्लुक़ क़ायम करना चाहिए और इस दुआ़ का एहतेमाम भी करना चाहिए।

अल्लाह पाक की मुहब्बत बढ़ाने की दुआ़

"अल्लाहुम्म ज्अ़ल् हुब्बक अहब्ब इलय्य मिन्नफ़्सी व अह्ली व मिनल् माइल् बारिद"

(तिर्मिज़ी)

नोट:इस दुआ़ की बरकत से तमाम महबूब चीजों पर अल्लाह की मुहब्बत ग़ालिब हो जाती है।

ख़ालिक़ भी मुहब्बत करे और मख्लूक़ भी

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक हुब्बक,वहुब्ब मंय्युहिब्बुक वल्अ़मलल्लज़ी युबल्लिगुनी हुब्बक"

(तिर्मिज़ी)

अल्लाह पाक ने कुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया है के"ऐ नबी कह दीजिए के अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तुम से मुहब्बत करे तो तुम मेरी इत्तेबाअ़ करो। (आले इमरान)
नबी की इत्तेबाअ़ होती है तो अल्लाह की मुहब्बत हासिल होती है,फिर अल्लाह पाक फरिश्तों में उसकी मुहब्बत का ऐलान फरमा देते हैं,जिसके नतीजे में फ़रिश्ते उससे मुहब्बत करते हैं।फिर सारी मख्लूक़ में ऐलान होता है तो सारी मख्लूक़ मुहब्बत करने लगती है।चुनांचे ज़िन्दगी के हर शोबे में नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तेबाअ़ भी करें और मज़्कूरा दुआ़ के ज़रिये इत्तेबाअ़ की तौफीक भी मांगते रहें। ख़ालिक़ भी मुहब्बत करेगा और मख्लूक़ भी।

अल्लाह् के हर फ़ैसले पर राज़ी

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक नफ्सम् बिक मुत्मइन्नतन् तुअ्मिनु बिलिक़ाइक व तर्ज़ा बिक़ज़ाइक व तक़्नउ बिअ़ताइक" (तबरानी)

अल्लाह् के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस दुआ में अल्लाह् तआ़ला की ज़ात से मुत्मइन रहने वाला ऐसा नफ़्स मांगा है जो अल्लाह् पाक की मुलाक़ात का यक़ीन रखता हो और अल्लाह् पाक के हर फ़ैसले और अ़ता पर राज़ी रहनेवाला हो।

इत्तेबाए सुन्नत में आसानी की दुआ

"अल्लाहुम्मफ्तह् मसामिअ़ क़ल्बी लिज़िक्रिक वर्ज़ुक़्नी ताअ़तक व ताअ़त रसूलिक व अ़मलम बिकिताबिक" (तबरानी १३५२)

इस दुआ की बरकत से इत्तेबाए सुन्नत की तौफीक़ भी होगी और आसानी भी।

वो मिले जो अल्लाह के नेक बन्दों को मिलता है

"अल्लाहुम्म आतिनी अफ्ज़ल मा तुअ्ती इ़बादक स्सा़लिहीन " (मुस्तदरक हाकिम)

इस दुआ के एहतेमाम की बरकत से उम्मीद बल्के यकीन है के अल्लाह पाक हमें भी दुनिया व आख़िरत की वो तमाम नेअ़्मतें अ़ता फ़रमायेंगे जो अल्लाह के वलियों और नेक बन्दों को अ़ता होती हैं।

अपनी नज़रों में छोटा,औरों की निगाह में बड़ा

अल्लाह के ह़बीब स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ये दुआ़ मांगा करते थे।

"इलैक रब्बि फहब्बिब्नी व फी नफ्सी लक रब्बि फज़ल्लिल्नी व फ़ी अअ्युनिन्नासि फअ़ज्ज़िम्नी व मिन् सय्यिइल अख़्लाक़ि फजन्निब्नी''

(कंज़ुल उ़म्माल)

हिदायत, तक़्वा और मालदारी की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. फरमाते हैं के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये दुआ माँगा करते थे।

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् हुदा,वत्तुका वल् अफाफ वल् गिना" (मुस्लिम)

दीन पर साबित क़दमी की दुआ

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि . फरमाते है के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अक्सर दुआ ये होती थी।: "अल्लाहुम्म सब्बित क़ल्बी अला दीनिक" (इब्ने माजा)

आमाल की क़बूलियत के लिए

"रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल् अलीम" (बक़रह)

किसी भी नेक अमल और ख़ैर का काम करने के बाद ये दुआ मांग ली जाए तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है के वो अमल ज़रूर क़बूल होगा।

इ़बादत का ह़क़ अदा हो जाएगा

ह़ज़रत अ़ली रज़ि.से मरवी है के आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:ह़ज़रत जिब्रील अ़लै.नाज़िल हुए और फ़रमाया ऐ मुह़म्मद!अगर आप चाहें के रात और दिन की इ़बादत का ह़क़ अदा फरमाएं तो ये दुआ़ पढ़ें।

"अल्लाहुम्म लकल् ह़म्दु ह़म्दं कसीरम् मअ़ खुलूदिक व लकल ह़म्दु ह़म्दं ला मुन्तहा लहू दून मशीअतिक व लकल् ह़म्दु ला अज्र लिक़ाइलिही इल्ला रिज़ाक " (कंज़ुल उ़म्माल)

ईमान पर ख़ात्मा

"रब्बना ला तुज़िग़ कुलूबना बअ़्द इज़् ह़दैतना वह़ब लना मिल्लदुन्क रह़मतन् इन्नक अन्तल् वह्हाब" (आले इ़मरान)

जो शख़्स हर नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ने की आ़दत बना ले इन शाअल्लाह उसका ख़ात्मा ईमान पर होगा। (गंजीना-ए-असरार स.१७)

चेहरा मुनव्वर हो जाए

"इन्नहू हुवल् बर्रुर्रहीम" (सूर-ए-तूर)

जो कोई इस आयते करीमा को नमाज़ के बाद ग्यारह बार ऊँगली पर दम करके पेशानी पर मले तो इन शाअल्लाह क़यामत में उसका चेहरा चमकेगा। (आमाले कुरआनी)

घरवाले मुत्तक़ी

और आप मुत्तक़ियों के इमाम

"रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिया-तिना कुर्रत अअ़्यूनिं व्वजअ़ल्ना लिल्मुत्तक़ीन इमामा" (सूर-ए-फ़ुरक़ान)

तक़्वे वाला ही अल्लाह का वली है।इस दुआ की बरकत से घरवाले मुत्तक़ी बनेंगे और आप मुत्तक़ियों के इमाम।

अब्दाल बनने का नुस्ख़ा

फ़क़ीह अबूल्लैस समरक़ंदी रह़.ने फ़रमाया जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इन दुआइया

कलिमात को मांगता रहेगा,उस का शुमार अब्दालों में होगा।हज़रत इमाम अबुल हसन शाज़ली रह.फरमाते है के जो शख्स हर रोज़ ये दुआ सुबह व शाम तीन मर्तबा मांगेगा उसका नाम अबरार लोगों में लिखा जाएगा। मशहूर मुहद्दिस अल्लामा अबू नुऐम अस्फ़हानी ने अपनी "हिलयह" में भी यही लिखा है।ये दुआ खुसूसी तौर पर रिजालुल्लाह (अल्लाह वालों की मख्सूस जमाअत) को हज़रत ख़िज़र अलै.की जानिब से राज़दाराना तौर पर सिखाई गई है।इस दुआ को मांगते रहने वालों के लिए कुर्बे खुदावन्दी और हुज़ूर नबी ए करीम स़ल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मंज़ूरे नज़र होने की बशारत दी गई है। वो मुबारक दुआ ये है:

"अल्लाहुम्म ग़्फिर् लिउम्मति सय्यिदिना मुहम्मदिं स़ल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्मरहम् उम्मत सय्यिदिना मुहम्मदिं स़ल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्म अस्लिह् उम्मत सय्यिदिना मुहम्मदिं स़ल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्मस्तुर उम्मत सय्यिदिना मुहम्मदिंव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्मज्बुर उम्मत सय्यिदिना मुहम्मदिंव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्म फर्रिज् अन उम्मति सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाहुम्मन्सुरिल् इस्लाम वल् मुस्लिमीन

अल्लाहुम्मग्फिरलना व लिल्मुअ्मिनीन वल्मु-अ्मिनात वल् मुस्लिमीन वल् मुस्लिमात व अस्लिह्हुम व अस्लिह् ज़ात बैनिहिम व अल्लिफ् बैन कुलूबिहिमुल ईमान वल् हिकमत"

(हिलयतुल औलिया)

मोमिन से दिल साफ रखने की दुआ

"रब्बनग्फिरलना वलि इख्वानिनल्लज़ीन सबक़ू-ना बिलईमानि वला तज्अल फ़ी कुलूबिना ग़िल्लल्लिल्लज़ीन आमनू रब्बना इन्नक रऊफुर्रहीम "

(सूर-ए-हश्र)

कीना,हसद,बदगुमानी वग़ैरा ऐसे गुनाहे कबीरा हैं,जिनसे दिल गन्दा और आमाल बर्बाद हो जाते है। ये दुआ मांगते रहना दिल साफ़ रखने के लिए बहुत मुफीद है।

बद अख़्लाक़ी और ग़लत ख़्वाहिशों से बचाव

"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिम्मुन्करातिल अख़्लाक़ि वल् अअ्मालि वल् अह्वाअ" (तिर्मिज़ी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है के मै अख़्लाक़ की ख़ूबियों की तक्मील के लिए भेजा गया हूँ।

अल्लाह वाले अच्छे अख़्लाक़ वाले होते हैं ,यही वजह है के अल्लाह पाक ने ईमान वालों को अपने अख़्लाक़ संवारने के लिए अल्लाह वालों के पास जाने का हुक्म दिया है।इसलिए इस दुआ के एह्तेमाम के साथ साथ अल्लाह वालों से इस्लाही तअल्लुक़ रखना भी ज़रूरी है।

ज़ाहिर और बातिन के गुनाहों से हिफ़ाज़त

"अल्लाहुम्म तह्हिर् क़ल्बी मिनन्निफ़ाक़ व अ़मली मिनर्रिया व लिसानी मिनल् कज़िबि व ऐनी मिनल् ख़ियानति फ़इन्नक तअ़्लमु खाइनतल अअ़्यूनि वमा तुख़्फ़िस्सुदूर''

(उस्दुल गाबह)

अल्लाह पाक का हुक्म है के ज़ाहिर के गुनाह भी छोड़ो और बातिन के गुनाह भी।और दुआ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ाहिर और बातिन के गुनाहों से बचने की दुआ उम्मत को तालीम फरमाई है।

हर गुनाह से हिफ़ाज़त

"अल्लाहुम्म बाइद बैनी व बैन खतायाय कमा बाअ़द्त बैनल् मशरिकि वलमग़रिबि अल्लाहुम्म नक़्क़िनी मिनल् ख़ताया कमा युनक़्क़स्सौबुल अबयज़ु मिन द्दनस,अल्लाहुम्म ग्सिल खतायाय बिल्माइ वस्सल्जि वलबरद।

(बुख़ारी)

गुज़िश्ता गुनाहों की बख़्शिश और आइंदा गुनाहों से हिफ़ाज़त के लिए बहुत अहम दुआ है।

क़ब्र की वहशत दूर करने कि दुआ

"अल्लाहुम्म आनिस वहशती फ़ी क़ब्री"

(अल फवाइद लिश्शौकानी)

इस दुआ में क़ब्र की वहशत से पना मांगी गई है।इसके एहतेमाम से क़ब्र की वहशत ख़त्म हो जाएगी,इन शाअल्लाह।

अज़ाबे क़ब्र से हिफ़ाज़त

नसाई शरीफ की रिवायत में है के नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के बाद अज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगा करते थे।चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ये दुआ भी मन्कूल है " अऊज़ु बिल्लाहि मिन अज़ाबिल क़ब्रि" (तबरी)

मग़्फिरत का अजीब अंदाज़

जो शख़्स दिन या रात में या हफ़्ते या महीने में एक मर्तबा ये दुआ पढ़ लेगा वो अगर

उस दिन या रात या उस हफ़्ते या महीने में मर गया तो उसके गुनाह ज़रूर बख़्श दिए जाएंगे।

(हिस्ने हसीन)

"ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर,ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू,ला इलाह इल्लल्लाहु ला शरीक लहू,ला इलाह इल्लल्लाहू लहुल् मुल्कु वलहुल हम्दु,ला इलाह इल्लल्लाहू वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" (नसाई)

जहन्नम से आज़ादी का परवाना

हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी रिवायत करते है के उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने चुपके से इर्शाद फ़रमाया जब तुम मग़रिब की फ़र्ज़ नमाज़ से फारिग़ हो जाओ तो सात मर्तबा पढो: "अल्लाहुम्म अजिर्नी मिन न्नार" अगर तुम उसी रात वफ़ात पा जाओगे तो खुदा तआला तुम्हे जहन्नम से आज़ादी का परवाना मरहमत फ़रमायेंगे। इसी तरह जब तुम फजर की फ़र्ज़ नमाज़ से फारिग़ हो जाओ तो सात मर्तबा यही दुआ पढो।अगर उस दिन इन्तेकाल कर गए तो जहन्नम से आज़ादी का का परवाना तुम्हारे

लिए लिख दिया जाएगा। (अबू दाऊद)

हाथ पकडके जन्नत में

हज़रत मुन्ज़िर अस्लमी रजि. रिवायत करते हैं के मैने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फरमाते हुवे सुना के जो शख्स सुबह को ये दुआ पढे मै उसका ज़िम्मेदार हूँ के उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में दाखिल कर दूँ। "रजीतु बिल्लाहि रब्बंव्व बिल् इस्लामि दीनंव्व बिमुहम्मदिं नबिय्या सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" (मज्मउज़्ज़वाइद)

जन्नत में दाखले का आसान अमल

हज़रत शद्दाद बिन औफ़ रजि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जिसने इसको यक़ीन के साथ शाम को पढ़ लिया और उसकी वफ़ात उस रात को हो गई तो वो जन्नत में दाखिल होगा और जिसने यक़ीन के साथ सुबह को पढ़ लिया और उसकी वफात उस दिन हो गई तो वो जन्नत में जाएगा। (बुखारी)

"अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह् इल्ला अन्त खलक़्तनी व अन अ़ब्दुक व अन अ़ला अ़हदिक व वअ़दिक मस्ततअ़्तु अऊज़ु बिक मिन शर्रि मा सनअ़्तू अबूउ लक बिनिअ़्मतिक अलय्य व अबूउ बिज़ंबी फग़्फ़िर्ली फइन्नहू ला यग्फ़िरु ज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त"

इ़बादत करें फ़रिश्ते-स़वाब मिले हमें

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़लक़ स्समावाति वल् अर्ज़ व जअ़लज़्ज़ुलुमाति वन्नूर सुम्मल्लज़ीन कफ़रू बिरब्बिहिम यअ़्दिलून।हुवल्लज़ी खलक़कुम मिन तीनिं सुम्म क़ज़ा अजला।व अजलुम् मुसम्मं इ़न्दहू सुम्म अन्तुम तम्तरून।वहुवल्लाहू फ़िस्समावाति व फ़िलअर्ज़।यअ़्लमु सिर्रकुम व जहरकुम व यअ़्लमु मा तक्सिबून"

जो शख़्स सूर-ए-अनआ़म की ऊपर लिखी हुई तीन आयतें पढ़े,उसके लिए चालीस फ़रिश्ते मुक़र्रर किए जाएंगे जो क़यामत तक इ़बादत करेंगे और सारा सवाब पढ़ने वाले के नामा-ए-आमाल में लिखा जाएगा।और एक

फ़रिश्ता आस्मान से लोहे का गुर्ज़ लेकर नाज़िल होता है,जब इस को पढ़ने वाले के दिल में शैतान वसवसे डालता है तो वो फ़रिश्ता उस गुर्ज़ से उसकी ख़बर लेता है और सत्तर परदे बीच में हाएल हो जाते हैं।क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमायेंगे तू मेरे ज़ेरे साया चल,जन्नत के फल खा,हौज़े कौसर का पानी पी,सलसबील की नहर में नहा,तू मेरा बंदा मैं तेरा रब। (तफ़्सीरे दुर्रे मंसूर)

इतना मिले के फ़रिश्ते लिख ना सकें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:अल्लाह के एक नेक बन्दे ने ये दुआ पढ़ी तो उसका सवाब लिखना फरिश्तों पर दुशवार हो गया के कैसे लिखें?तो अल्लाह तआला ये जानते हुवे भी के उस बन्दे ने ये दुआ पढ़ी है फरिश्तों से सवाल करते हैं के मेरे उस बन्दे ने क्या पढ़ा?तो फरिश्तों ने अर्ज़ किया ये पढ़ा।

"या रब्बि लकल् हम्दु कमा यंबग़ी लिजलालि वज्हिक व अज़ीमि सुल्तानिक"

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया के फिलहाल उसी तरह लिखो जिस तरह पढ़ा,जब मेरा बंदा मुझे मिलेगा उस वक़्त मैं ही उसकी जज़ा और सवाब उसको दूंगा। (इब्ने माजा)

सत्तर हज़ार फरिश्तों की दुआ-ए-रहमत

हज़रत मअ्क़िल बिन यसार रजि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :के जो शख्स सुबह को तीन मर्तबा "अऊज़ु बिल्लाहिस्समीइल् अलीमि मिनश्शैतानिर्रजीम"

पढ़े। फिर सूर-ए-हश्र की आख़री तीन आयात एक मर्तबा पढ़े।तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फरिश्तें मुक़र्रर कर देते हैं जो शाम तक उसके लिये दुआ-ए-रहमत करते रहते हैं।और अगर उसी दिन उसे मौत आ गई तो वो शहीद मरेगा।और जो शख्स शाम को पढ़ ले तो इसी

तरह सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ-ए-रहमत करते रहते हैं और अगर वो उस रात मर गया तो शहीद मरेगा। "अऊजु बिल्लाहिस्समीइल अलीमि मिन श्शैतानिर्रजीम,हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाह इल्ला हूव आलिमुल् गैबि वश्शहादति हुवर्रहमानुर्रहीम हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला इल्ला हूव अल् मलिकुल् कुद्दूसुस्सलामुल् मुअ्मिनुल् मुहैमिनुल् अज़ीज़ुल् जब्बारुल् मुतकब्बिर सुब्हानल्लाहि अम्मा युशरिकून हुवल्लाहुल् खालिकुल् बारिउल् मुसव्विरू लहुल् अस्माउल् हुस्ना युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वलअर्ज़ि वहुवल् अज़ीज़ुल् हकीम" (तिर्मिज़ी)

नेकियों की कमी पूरा कर देनेवाला अमल

हज़रत इब्ने अब्बास रजि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:जो शख्स सुबह होते ही(नीचे लिखी आयत पढ़ ले तो उसके (मामूलात और नेकियों में)जो कमी उस दिन रह गई होगी वो पूरी कर दी जाएगी। और जो शाम के वक़्त पढ़

ले तो जो कमी उस रात रह गई होगी वो पूरी कर दी जाएगी। (अबू दावूद)

"फसुब्हानल्लाहि हीन तुम्सून व हीन तुस्बिहून वलहुल् हम्दु फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व अशिय्यंव्व हीन तुज़्हिरून।युख़्रिजुल् हय्य मिनल् मय्यिति व युख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व युहइल् अर्ज बाद मौतिहा व कज़ालिक तुख़्रजून''

(सूर- ए- रूम)

नमाज़ के बाद के अज़्कार

नमाज़ का पूरा सवाब हासिल हो जाए

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि.से रेवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जो शख़्स हर नमाज़ के बाद नीचे लिखी गयी तीन आयतें पढ़ लेगा वो भरपूर सवाब पायेगा और उसे नमाज़ का पूरा पूरा अज्र मिलेगा। (अल मुअ्जमुल कबीर लित्तबरानी)

"सुब्हान रब्बिक रब्बिल् इज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून व सलामुं अलल् मुरसलीन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'' (सूर-ए-साफ़्फ़ात)

नबी की शफाअ़त ह़ासिल होने का अ़मल

"लक़द जाअकुम रसूलुम् मिन् अन्फुसिकुम अ़जीज़ुं अ़लैहि मा अ़नित्तुम ह़रीसुन् अ़लैकुम बिल् मुअ्मिनीन रऊफुर्रह़ीम,फइन तवल्लौ फकुल् ह़स्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कल्तू व हुव रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम"

(सूर-ए- तौबा)

ह़र नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ने का मामूल आँ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफाअ़त का मज़बूत ज़रीया है।

(गंजीना-ए-असरार स,२१)

मरते ही जन्नत

अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने ह़र नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ी उसे जन्नत में दाखिल होने से मौत ही रोक सकती है। (नसाई)

आयतल कुर्सी ये है:

"अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् ह़य्युल् क़य्यूमु ला तअ्खुज़ुहू सिनतुं व्वला नौम। लहू मा

फ़िस्समावाति वमा फिल् अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ इन्दहू इल्ला बिइज़्निहि यअ्लमु मा बैन ऐदीहिम वमा ख़ल्फहुम् वला युहीतून बिशैइम् मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ वसिअ कुर्सिय्युहूस्समावाति वल् अर्ज वला यऊदुहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल् अलिय्युल अज़ीम"

(सूर-ए-बक़रा)

ज़रूरतें पूरी हों और जन्नत भी मिले

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रजि.से रवायत है के हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जब सूर-ए-फातेहा,आयतुल कुर्सी,शहिदल्लाहु से अज़ीज़ुल् हकीम तक और कुलिल्लाहुम्म मलिकल् मुल्कि से बिग़ैरी हिसाब तक नाज़िल हुई तो अर्श से मुअल्लक होकर (लटक कर)अल्लाह से फ़रयाद की के क्या आप हम को ऐसी कौम पर नाज़िल फरमा रहें हैं जो गुनाहों का इर्तेकाब करेगी ?

इर्शाद फ़रमाया के क़सम है मेरी इज़्ज़त व जलाल और इरतेफा-ए-मकान की के जो लोग हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तुम्हारी तिलावत करेंगे

हम उनकी मगफिरत फ़रमाएंगे,उन्हें जन्नतुल फ़िरदौस में जगह देंगे,रोज़ाना सत्तर मर्तबा नज़रे रहमत से देखेंगे और उनकी सत्तर हाजतें पूरी करेंगे जिन में अदना हाजत मग़्फिरत है।

फाएदा:बाज़ रिवायतों में है के हम उसके दुश्मनों पर उसको ग़लबा अता करेंगे।

(रूहुल मआनी)

पढ़ने का तरीक़ा: सूर-ए-फातिहा और आयतल कुर्सी पढ़ने के बाद नीचे लिखी हुई आयतें पढ़े:

"शहिदल्लाहू अन्नहु ला इलाह इल्ला हुव वल्मलाइकतु व उलुल् इल्मि क़ाइमम् बिल्किस्ति ला इलाह इल्ला हुवल् अज़ीज़ुल् हकीम"

फिर ये पढ़े

कुलिल्लाहुम्म मालिकल् मुल्कि तुअ्तिल् मुल्क मनतशाउ व तन्ज़िउल मुल्क मिम्मन् तशाउ व तुइज़्ज़ु मन् तशाउ व तुज़िल्लू मन् तशाउ। बियदिकल् ख़ैर इन्नक अ़ला कुल्लि शैइं क़दीर।तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलिजुन्नहार फिल्लैलि व तुख़्रिजुल् हय्य मिनल मय्यिति व

तुख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व तर्ज़ुकु मन् तशाउ बिग़ैरि हिसाब'' (आले इम्रान)

नबी की वसिय्यत :

ये दुआ कभी ना छोड़ना

हज़रत मुआज़ बिन जबल रजि.रिवायत करते हैं के एक दिन हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़कर मुझ से फ़रमाया ऐ मुआज़!अल्लाह की क़सम मुझको तुम से मुहब्बत है।हज़रत मुआज़ रजि.ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान,अल्लाह की क़सम मुझे भी आप से मुहब्बत है।आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ मुआज़!(इसी मुहब्बत की बिना पर) मै तुम्हें वसिय्यत करता हूँ के किसी नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ना ना छोड़ना।

"अल्लाहुम्म अइन्नी अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक" (अद्दुआ लित्तब्रानी)

मुस्नदे अहमद में मज्कूर है के ये दुआ किसी से बातचीत करने से पहले पढ़नी चाहिए।

औलाद के साथ वालिदैन के गुनाह भी माफ़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि.से रिवायत है के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जो शख्स जुमा की नमाज़ के बाद:

"सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि वबिहम्दिही"

सौ मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला उसके एक हज़ार गुनाह और उसके माँ बाप के चोबीस हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमाएंगे।

(अमलुल यौमि वल्लैलह)

अस्सी साल के गुनाह माफ़ और अस्सी साल की इबादत का सवाब

हज़रत अबू हुरैरा रजि.से रिवायत है:जो शख्स जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले अस्सी मर्तबा ये दरूद शरीफ पढ़े तो उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ होंगे और उसके लिए अस्सी साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा। (फ़ज़ाइले दरूद)

"अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबिय्यिल् उम्मिय्यि व अला आलिही व सल्लिम् तस्लीमा"

सारे गुनाह माफ़ हो जाएंगे

"अस्तगफिरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु व अतूबु इलैहि"

हज़रत अनस रजि.से रिवायत है के जो शख्स जुमा के दिन फज्र की नमाज़ से पहले ये दुआ तीन मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला उसके गुनाहों की मग़फिरत फरमा देंगे अगरचे वो समंदर की झाग के बराबर हों।

(अल अज़्कार स.८६)

दूसरा ह़िस्सा

दुन्यवी नफे की दुआयें

ह़मेशा स़ेह्ह़त मंद रहिए

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक स़िसह्ह़त वल्इफ्फत वल् अमानत व ह़ुस्नल् खुलुक़ि वर्रिज़ा बिल् क़दर" (बुख़ारी)

सेह़त अल्लाह् पाक की बहुत बड़ी निअ़्मत है।इस दुआ़ में अल्लाह् के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कई नेअ़्मतों का सवाल किया है मगर सब से पह्ले जिस नेअ़्मत को माँगा है वो सेह्ह़त की निअ़्मत है।उसूले सेह्ह़त के लिए शरीअ़त में जो बातें बतलाई गई हैं उनकी रिआ़यत करते हुए इस दुआ़ का भी एह्तेमाम कीजिए और ह़मेशा स़िह्ह़त मन्द रहिए।

बेह्तरीन रिज़्क़ और बुराइयों से हिफ़ाज़त

ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ि.से रिवायत है के

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जो शख्स सुबह में ये दुआ पढ़ ले उस दिन बेहतरीन रिज़्क़ से नवाज़ा जाएगा।और बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

मा शाअल्लाहु ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि,अशहदु अन्नल्लाह अला कुल्लि शैइं क़दीर' (कंज़ुल उम्माल)

नोट:माल जब आता है तो अपने साथ कुछ फ़ित्ने भी लाता है,मसलन ग़लत दोस्त,मतलब परस्त लोग,ग़लत सोसाइटी,मालदारों की नक़ल और उस नक़ल में दुसरे मालदारों से बढ़ जाने की हिर्स,शादियों और दीगर तक़रीबात के उन्वान से फुज़ूल ख़र्ची और रस्म व रिवाज पर एक दुसरे से बढ़ चढ़ कर नाम ओ नमूद के लिये ख़र्च करना, दूसरी तरफ़ हासिदीन का बढ़ जाना,लुटेरों का ख़दशा लगा रहना।और इन सब वुजूहात की बिना पर दिल में एक बेचैनी की कैफ़ियत रहना जो खुदा की याद से रुकावट बने।इसके अलावा माल के साथ बहुत तरह के नुक्सानात का अंदेशा होता है।अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुआ के

ज़रिये माल के हुसूल के साथ साथ उसके तमाम फ़ित्नों से हिफाज़त की दुआ सिखा दी।पाबन्दी से पढ़िये और नफ़ा उठाइए।

हमेशा ऐश में रहिए

सूर-ए-इन्ना अन्ज़लना ,कुल या अय्युहल काफ़िरून और कुल हुवल्लाहु अहृद ११-११ मर्तबा पढ़ कर पानी में दम करके नए कपड़े पर

छिड़क दे तो उसके इस्तेमाल तक ऐश में रहेगा।

(आमाले कुरआनी)

गुमान से बढ़ कर रोज़ी मिले

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया के जिस ने इस्तेग़फ़ार को अपना वज़ीफ़ा बना लिया,अल्लाह तआला उसको हर तंगी से महफ़ूज़ रखता है।और ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है जहाँ से गुमान भी नहीं होता। (अबू दाबूद)

इस्तेग़फ़ार का एक कलिमा ये है: "अस्तग़्फ़िरुल्लाह रब्बी मिन् कुल्लि ज़ंबिंव्व अतूबु इलैह"

दुनिया नाक रगड़ती हुई आएगी

हज़रत आयेशा रज़ि.बयान करती हैं के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै.को ज़मीन पर उतारा तो वो उठकर मकामे कअ़बा में आए और दो रकअ़त नमाज़ पढ़कर ये दुआ पढ़ी। अल्लाह तआला ने उसी वक्त वह्‌ी

भेजी के ऐ आदम!मैंने तेरी तौबा क़बूल की और तेरा गुनाह माफ़ किया।और जो कोई मुझसे इन कलिमात से दुआ करेगा, मै उसके भी गुना माफ़ कर दूंगा। और उसकी मुहिम को फतह कर दूंगा और शैतान को उससे रोक दूंगा। और दुनिया उसके दरवाज़े पर नाक रगड़ती चली आयेगी अगरचे वो उसको देख ना सके। दुआ ये है:

"अल्लाहुम्म इन्नक तअ़लमु सिर्री व अलानियती फक़्बल मअ़ज़िरती व तअ़लमु हाजती फअअ़्तिनी सुअ़्ली व तअ़लमु मा फ़ी नफ्सी फग़्फ़िरली ज़ंबी अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानं युबाशिरू क़ल्बी व यक़ीनं सादिकं हत्ता

अअ्लम अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा कतब्त ली व रिज़म् बिमा क़सम्त ली"(तबरानी व बैहक़ी)

माल में बरकत हो जाए

माल बहुत हो मगर बरकत ना हो तो वो बहुत होने के बाद भी बहुत नहीं होता।और अगर थोड़े में बरकत हो जाए तो थोड़ा होने के बावजूद भी काफ़ी हो जाता है।रिज़्क़ में बरकत

के लिए रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ये दुआ मांगी है:

"अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ी साइना व मुद्दिना वज्अ़ल् मअ़ल् बरकति बरकतैनि"

(सहीह मुस्लीम)

माल में बरकत और क़नाअ़त की दुआ

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रजि.फरमाते हैं अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुआ को कभी नहीं छोड़ते थे।

"अल्लाहुम्म क़न्निअ्नी बिमा रज़क़्तनी व बारिक ली फ़ीह" (कंज़ुल उम्माल)

अल्लाह की निअ़्मतें मुकम्मल हो जाएगी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि.रेवायत करते हैं के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स तीन मर्तबा सुबह को ये दु पढ़ लिया करे तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है के उसपर अपनी निअ़्मतों को मुकम्मल कर दे।

(अ़मलुल यौमी वल्लैलह)

सुबह को ये पढ़े:

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्बह़तु मिन्क फ़ी निअ़्मतिंव्व आ़फियतिंव्व सित्र फअतिमम् अ़लय्य निअ़्मतक व आ़फियतक व सित्रक फिद्दुनया वल् आख़िरह्" शाम को ये पढ़े : "अल्लाहुम्म इन्नी अम्सैतु मिन्क फ़ी निअ़्मतिंव्व आफियतिंव्व सित्र फअत्मिम अ़लय्य निअ़्मतक व आ़फियतक व सित्रक फिद्दुनया वल आख़िरह्"

निअ़्मतों के शुक्र की दुआ़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ग़नम रज़ि.से रेवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जिसने सुबह शाम की

ये दुआ पढ़ ली तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया। सुबह् को ये पढ़े: "अल्लाहुम्म मा अस्बह् बी मिन्निअ्मतिं औबिअह्दिम् मिन ख़ल्किक फमिन्क वह्दक ला शरीक लक फलकल् ह्म्दु व लकश्शुक्र "शाम को ये पढ़े "अल्लाहुम्म मा अम्सा बी मिन्निअ्मतिं औबिअह्दिम् मिन ख़ल्किक फमिन्क वह्दक ला शरीक लक फलकल् ह्म्दु व लकश्शुक्र" (अबू दावूद)

निअ्मतों की हिफाज़त होगी

"अल्लाहुम्म इन्नी आऊज़ु बिक मिन् ज़वालि निअ्मतिक व तह्व्वुलि आफियतिक व फुजाअ-ति निक्मतिक व जमीइ सख़तिक" (मुस्लिम)

खुशहाली और निअ्मतों के हुसूल के बाद निअ्मतों के ज़वाल से बचने की कोशिश ज़रूरी है। निअमतों के ज़वाल का बड़ा सबब निअ्मतों की नाक़द्री और अल्लाह तआला की नाशुक्री है ऊपर दी गयी दुआ की पाबन्दी की जाए तो निअ्मतें ज़वाल से मह्फूज़ रहेंगी।

बुढ़ापे में ज़्यादा रोज़ी मिले

"अल्लाहुम्म ज्अ़ल् औसअ़ रिज़्क़िक अ़लय्य इंद किबरि सिन्नी वन्किताइ उ़मुरी" (हाकीम)

इस दुआ की बरकत से रिज़्क़ में वुसअ़त हो जाती है।बुढ़ापे में रिज़्क़ की वुसअ़त एक ऐसी ज़रूरत है,जो आम तौर से बुढ़ापे से पहले समझ में नहीं आती मगर अल्लाह के हबीब स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ना सिर्फ ये के इस ज़रूरत की तरफ उम्मत को मुतवज्जेह फ़रमाया बल्के

ऐसी दुआ तालीम फरमाई के इंसान बुढ़ापे में जब दूसरों के सहारे का मुहताज हो जाता है,उस वक़्त भी मख़्लूक़ की मुहताजगी से बच जाए।और रिज़्क़ में वुसअ़त की वजह से अपनी तमाम ज़रूरतों का ख़ुद कफ़ील हो जाए।

बग़ैर शादी वालों की शादी हो जाए

"वला तमुद्दन्न अ़ैनैक इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़हरतल् हयातिद्दुनया लिनफ्तिनहुम् फीहि ,व रिज़्क़ु रब्बिक खैरुंव्व अबक़ा वअ्मुर अह्लक बिस्स़लाति वस़्तबिर

अलैहा ला नस्अलुक रिज़्क़ा। नह्नु नर्ज़ुकुक वल्आ़क़िबतु लित्तक़्वा'' (सूर-ए-ताहा)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत थानवी रह़.ने लिखा है के अगर इस आयत को लिख कर बांधे तो शादी हो जाती है। (आमाले कुरआनी स. ४९)

ह़मल ज़ाया हो जाने से ह़िफ़ाज़त

बीवी का ह़मल ज़ाया हो जाने का अंदेशा हो तो शोहर उसकी नाफ पर ऊँगली रख कर "अल मुब्दिउ'' ९० मर्तबा पढे तो ना ह़मल ज़ाया होगा और ना देर तक रहेगा।

(ह़िस्ने ह़सीन)

लड़का हासिल करने के लिए

"रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दव्व अंत खैरुल् वारिसीन''

(पुरनूर दुआएं स.२९)

अगर किसी शख़्स की औलाद ना हो या बेटी ही हो बेटा ना हो तो ये दुआ कसरत से पढना चाहिए।

विलादत में सहूलत

"इज़स्समाउन्शक़्क़त व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त व इज़ल् अर्जु मुद्दत व अल्क़त मा फीहा व तख़ल्लत व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त"

(गंजीना -ए-असरार)

औरत जब बच्चे की विलादत की तक्लीफ में मुब्तला हो तो खजूर पर या किसी मीठी चीज़ पर ये आयतें तीन दफ़ा पढ़कर दम करके खिलाने से विलादत में आसानी होगी।

बच्चा बालिग़ होने तक अल्लाह की हिफ़ाज़त में

विलादत के बाद "अलबर्र" सात मर्तबा पढ़ कर बच्चे पर दम कर दे और अल्लाह के करम के सुपुर्द करे यानी यूँ कहे के ऐ अल्लाह! मै इस बच्चे को आप के करम के हवाले करता हूँ तो बच्चा बालिग़ होने तक तमाम आफात से महफूज़ रहेगा इन शाअल्लाह। (हिस्ने हसीन)

अगर किसी की औलाद नाफ़रमान हो तो एक हज़ार मर्तबा "अश्शहीदु" पढ़ कर दम करे इन शाअल्लाह औलाद फ़रमाँ बरदार हो जाएगी।

(गंजीना-ए-असरार स.५२)

जिस वक़्त चाहे नींद खुल जाए

जो आदमी सूर-ए-कहफ़ की ये आयतें इस इरादे से पढ़े के वो किसी मुतअय्यन वक़्त पर उठे तो अल्लाह तआला उसे उसी वक़्त बेदार फरमा देते हैं।

(फ़ज़ाइलुल कुरआन)

इन्नल्लजीन आमनू व अमिलूस्सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल फिरदौसि नुज़ुला,खालिदीन फीहा ला यबगून अन्हा हिवला कुल्लौ कानल् बह्रु मिदादल्लिकलिमाति रब्बी लनफिदल् बह्रु क़ब्ल अन तन्फद कलिमातु रब्बी वलौजिअ्ना बिमिस्लिही मददा,कुल् इन्नमा अन बशरुम मिस्लुकुम यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुँव्वाहिद,फ़मन् कान यरजू लिकाअ रब्बिही फलयअ्मल् अमलं सालिहंव्वला युशरिक बिइबादति रब्बिही अहदा"

(सूर-ए-कहफ़)

सामान की हिफ़ाज़त के लिए मुजर्रब अ़मल

"अल्लाहु ह़फ़ीज़ुं लतीफ़ुं क़दीमुं अज़लिय्युं ह़य्युं क़य्यूमुं ला यनाम।"अल्लाह तआ़ला के इन मुबारक नामों को किसी पर्ची में लिख कर सामान में रख दिया जाए तो हिफ़ाज़त होती है।

(अ़मलिय्याते अकाबिर)

गुमशुदा चीज़ की वापसी के लिए

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊ़न" अगर ये आयत पढ़ कर गुम हुई चीज़ तलाश की जाए तो इन शाअल्लाह तआ़ला ज़रूर मिल जाएगी

या ग़ैब से कोई चीज़ उससे उम्दा मिलेगी।

(आ़माले क़ुरआनी)

जब कोई चीज़ भूल जाए

एक रिवायत में है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:जो शख़्स कोई बात कहना या सुनाना चाहता हो मगर वो बात भूल जाए तो उसे चाहिए के मुझ पर दरूद

भेजे क्योंके दरूद शरीफ़ उस बात का बदल हो जाएगा और कुछ बईद नहीं के उसे वो बात याद भी आ जाए।

(अमलुल यौमी वल्लैलह)

नोटःऐसे मौक़े पर कोई भी दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए।एक मुख़्तसर दरूद ये भी है।

"सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल उम्मिय्यि व सल्लम"

जितना नुक्सान हो उससे ज़्यादा मिलेगा

उम्मुल मुअ्मिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि.से मरवी है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाःकिसी मुसलमान को कोई परेशानी मुसीबत पहुँचे और वो "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ने के बाद ये दुआ पढ़ ले "अल्लाहुम्मजुरनी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़ ली ख़ैरम् मिन्हा" तो अल्लाह तआला उससे बेहतर चीज़ अता फ़रमाएंगे।

(सहीह मुस्लीम)

सफ़र से बा मुराद वापसी के लिए

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि.रेवायत करते हैं

के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे इर्शाद फ़रमाया:क्या तुम ये चाहते हो के जब सफ़र में जाओ तो वहाँ से तुम अपने सब साथियों से ज़्यादा खुश हाल और बा मुराद हो और तुम्हारा सामान ज़्यादा हो जाए? उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बे शक मै ऐसा चाहता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:कुरआन मजीद की आख़री पाँच सूरतें(सूर-ए-काफिरून, सूर-ए-नस्र, सूर-ए-इख्लास, सूर-ए-फलक़,और सूर-ए-नास) पढ़ा करो।और हर सूरत को बिस्मिल्लाह से शुरू करो और बिस्मिल्ला पर ख़त्म करो। (तफ़सीरे मजहरी)

नया काम शुरू करे या नई जगह जाए

"वकुर्रब्बि अदख़िल्नी मुद्ख़ल सिदक़िं व्व अख़्रिज्नी मुख़्रज सिदक़िं व्वज्अल्ली मिल्लदुन्क सुल्तानं नसीरा" जब कोई नया काम शुरू करे या किसी नई जगह में दाख़िल हो तो अंजाम की

बेहतरी के लिए क़ुरआने करीम ने ये दुआ सिखाई है। (पुरनूर दुआएं)

ख़रीदारी में धोके से ह़िफ़ाज़त

ह़ज़रत बुरैदा रजि.से मरवी है के अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ार में दा़खिल होते तो ये दुआ पढ़ लिया करते थे।

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन् खै़रि हा़ज़स्सूक़ि व खै़रि मा फ़ीहा व आऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फीहा, अल्लाहुम्म इन्नी आऊ़ज़ु बिक अन् उसी़ब फ़ीहा यमीनं फाजिरतं औ स़फक़तन खा़सिरह्" (मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

बाज़ार में इस दुआ को पढ़ लेने की बरकत से इन्सान ख़रीदारी के घाटे से मह़फ़ूज़ हो जाता है। मुजर्रब है।

अधूरे काम मुकम्मल होंगे

"ह़स्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कल्तू व हुव रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीम' (अबू दावूद)

हज़रत अबू दर्दा रज़ि.से रेवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स सुबह शाम सात मर्तबा ये दुआ पढ़ा करे,ख्वाह सच्चे दिल से पढ़े या झूठे दिल से तो अल्लाह तआला उसके तमाम कामों की किफायत करेंगे।

अल्लाह की रहबरी और नफ़्स से हिफाज़त

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि.से रिवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे वालिद हज़रते हुसैन रज़ि.को दुआ के ये दो कलिमे सिखाये थे:"अल्लाहुम्म अलहिम्नी रुश्दी व अइज़्नी मिन् शर्रि नफ्सी"

(तिर्मिज़ी)

काम की दुरुस्तगी और अंजाम की बेहतरी के लिए इस दुआ को पढ़ा जाए तो अल्लाह तआला रहबरी फरमाते हैं और नफ़्सानी शर से हिफाज़त होती है। मुजर्रब है।

हर आज़माइश से हिफ़ाज़त

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया के जो ये दुआ मांगता रहे वो आज़माइश में मुब्तला होने से पहले ही मर जाएगा। (तबरानी)

"अल्लाहुम्म अहसिन् आकिबतना फिल् उमूरी कुल्लिहा व अजिरना मिन् ख़िज़इद्दुनया व अज़ाबिल् आख़िरह" (मुस्नदे अहमद)

हर काम के बेहतर अंजाम के लिए भी इस दुआ का पढ़ना मुफीद व मुजर्रब है।

इम्तेहान में कामियाबी के लिए

"फइन्न हस्बकल्लाहु हुवल्लज़ी अय्यदक बिनस़-रिही व बिल मुअ्मिनीन"

इम्तेहान में आसानी के लिए इम्तेहान से पहले सात(७) दफ़ा पढ़ लें। (अमलिय्याते अकाबिर ,स.४२)

आफियत की जामेअ़ दुआ

उम्मुल मुअ्मिनीन हज़रत आयेशा रज़ि.से रिवायत है के रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम आफ़ियत की दुआ अक्सर माँगा करते थे।आफियत की दुआ ये है: "असअलुल्लाहल् आफियत फिद्दुनया वल् आख़िरति"

(इब्ने माजा)

हज़ार हाजतों के लिये सलातुल हाजत

मुहम्मद बिन दुरुस्तुविया ने ज़िक्र किया है के मैने इमामे शाफई रह. की किताब में उनके ख़त से सलातुल हाजत का ज़िक्र देखा जो हज़ार हाजतों के लिए है।उसकी तालीम हज़रत ख़िज़र अलै.ने किसी अहले इबादत को दी थी।अव्वल दो रक्अत नमाज़ पढ़े। पहली रक्अत में सूर- ए-फ़ातेहा पढ़े और सूर-ए-काफिरून दस मर्तबा पढ़े दूसरी रक्अत में सूर-ए-फ़ातेहा के बाद दस मर्तबा सूर-ए-इख़्लास पढ़े। सलाम से फारिग़ होने के बाद सज्दा करे और सज्दे में दस मर्तबा

दरूद शरीफ पढ़े। और सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलि ल्लाहि व ला इलाह इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अजीम"दस मर्तबा पढ़े।इस के बाद "रब्बना आतिना फिद्दुनया हसनतंव्व फिल् आख़िरति हसनतंव्व क़िना अज़ाबन्नार"पढ़ कर

अपनी ज़रूरत का सवाल करे इन शाअल्ला पूरी होगी।

(शरहे एहयाउल उलूम)

दुआ-ए- इस्तेख़ारा

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि.फ़रमाते हैं के अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें इस्तेख़ारा की दुआ इस क़द्र एहतेमाम के साथ सिखाते थे जैसे कुरआने करीम की आयात याद कराते थे। "अल्लाहुम्म इन्नी अस्तख़ीरुक बिइल्मिक व अस्तक़दिरुक बिकुदरतिक व असअलुक मिन फज़्लिकल् अज़ीमि फइन्नक तक्दिरु वला अक्दिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल् गुयूब अल्लाहुम्म इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल् अम्र खैरल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आकिबति अम्री फक्दिर्हू ली वयस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फ़ीहि व इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल् अम्र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व मआशी व आकिबति अम्री फसरिफहु अन्नी वसरिफ्नी अन्हु वक़्दुर लियल् ख़ैर हैसु कान सुम्मर्ज़िनी बिह"

(बुख़ारी)

इस्तेख़ारा की छोटी दुआ

"अल्लाहुम्म ख़िर्ली वख़्तर्ली"

(सुनने तिर्मिज़ी)

इन्सान काम तो करता है मगर उसका अन्जाम नहीं जानता के अच्छा होगा या बुरा। इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत को ये दुआ सिखाई के पहले अल्लाह तआला से काम की भलाई और बेहतरी मांग लिया करो तो इन शाअल्लाह उस काम का अंजाम बेहतर हो जाएगा।

या अल्लाह!आफ़ियत के साथ हक़ दिखलाइए, हक़ समझाइए,हक़ पे चलाइए,हक़ पे जमाइए, हक़ की हिफ़ाज़त और उसके फैलाने के लिए हमें क़बूल फरमाइए और अहले हक़ के साथ हमारा हश्र फरमाइए।

तीसरा हिस्सा

तक्लीफ और नुक़्सान से बचाव (परेशानियों से नजात)

जान,माल और दीन की हिफाज़त

"बिस्मिल्लाहि अ़ला दीनी व नफ्सी व वलदी व अह्ली व माली" (कंज़ुल उम्माल)

जान माल,अह्ल व अ़याल और बिल खुसूस दीन व ईमान की हिफाज़त के लिए सुबह्र शाम इस दुआ का एह्तेमाम करना मुजर्रब है।

हर तक्लीफ देने वाले शर से हिफाज़त का अ़मल

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन खुबैब रज़ि.फरमाते हैं के आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया सुबह्र और शाम तीन-तीन मर्तबा सुर-ए-इख्लास, सुर-ए-फलक़ और सुर-ए-नास पढ़ लिया करो तो हर तक्लीफ़ देने वाले शर से तुम्हारी हिफाज़त के लिए काफ़ी है। (अबू दावूद)

तीनों सूरतें ये हैं:

बिस्मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम

"कुल् हुवल्लाहु अहद,अल्लाहुस्समद,लम् यलिद वलम् यूलद,वलम् यकुल्लहु कुफुवं अहद"

बिस्मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम

"कुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फलक मिन् शर्रि मा ख़लक़ व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्उक़द, व मिन् शर्रि हासिदिन् इजा हसद"

बिस्मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम

"कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नास, मलिकिन्नास, इलाहिन्नास,मिन शर्रिल् वस्वासिल् खन्नास, अल्लज़ी युवसविसु फी सुदूरिन्नास,मिनल् जिन्नति वन्नास"

घर की तंगी दूर कीजिए

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली ज़ंबी व वस्सिअ् ली फी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी" (तिर्मिज़ी)

ये दुआ वुज़ू के दर्मियान जब जी चाहे पढ़िए

लेकिन बुजुर्गों का तजरबा है कि वुजू के बीच में चेहरा धोते हुए मांगने से अल्लाह तआला घर की तंगी दूर फरमा देते है।

शोहर की नाराज़गी ख़त्म

जिस का शोहर नाराज़ हो वो किसी मिठाई पर ये आयत दम करके खिलाए इन शाअल्लाह शौहर मेहरबान हो जाएगा। (आमाले कुरआनी)

"व मिनन्नासि मंय्यत्तखिजु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बूनहुम् कहुब्बिल्लाहि वल्लजीन आमनू अशद्दु हुब्बंल्लिल्लाह वलौ यरल्लजीन ज़लमू इज़् यरौनल अज़ाब अन्नल् कुव्वत लिल्लाहि जमीअंव्व अन्नल्लाह शदीदुल् अज़ाब"

बीवी की नाफ़रमानी ख़त्म

शोहर अगर सुरह यूसुफ लिख कर और तावीज़ बनाकर बाजू पर बांधे तो उसकी बीवी उसको बहुत चाहने लगे। (आमाले कुरआनी)

नीज़ हर नमाज़ के बाद ये दुआ मांगना भी मुफीद व मुजर्रब है। "रब्बना हब् लना मिन्

अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना कुर्रत अअ्युनिं व्वज्अल्ना लिल्मुत्तकीन इमामा"

तमाम आफतों और दुश्मनों के मक्र से हिफाज़त

अल्लामा इब्ने सीरीन रह. के हवाले से मुसीबत व ग़म दूर करने के लिये ये सात आयतें "मुन्जियात" के नाम से मअ्रूफ व मुजर्रब है। हज़रत कअ्बुल अह्बार फ़रमाते हैं के कुरआने करीम की सात आयतें हैं,जिन्हें पढ़ लेने के बाद मुझे कुछ फ़िक्र नहीं होती,अगरचे आस्मान ज़मीन पर गिर पड़े तब भी अल्लाह के हुक्म से नजात पाउंगा।

एक रिवायत में है के जो कोई इन आयात को पढ़ेगा अगर उसपर उहुद के पहाड़ के बराबर भी अज़ाब आ पहुंचे तब भी अल्लाह तआला इन आयात की बरकत से उसको दूर कर देगा।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु ने फ़रमाया जो सुबह ओ शाम इन आयतों को पढ़ेगा वो दुनिया की तमाम आफतों और दुश्मनों

के मक्र से खुदा तआला के अम्न ओ अमान में रहेगा। वो आयतें ये हैं:-

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"कुल्लंय्युसीबुना इल्ला मा कतबल्लाहु लना हुव मौलाना व अलल्लाहि फलयतवक्कलिल् मुअ्मिनून" (सूर -ए-तौबा)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिं फ़ला काशिफ़ लहू इल्ला हू, व इंय्युरिद्क बिख़ैरिं फ़ला राद्द लिफज़्लिह, युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन् इबादिही वहुवल् ग़फ़ूरु र्रहीम" (सूर-ए-यूनुस)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"वमा मिन् दाब्बतिं फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्कुहा व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौदअहा, कुल्लुन् फ़ी किताबिं मुबीन" (सूर-ए-हूद)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"इन्नी तवक्कल्तु अलल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम, मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हुव आख़िज़ुम बिना-

.सियतिहा इन्न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम"

(सूर-ए-हूद)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"व कअय्यिम् मिन् दाब्बतिल्ला तहमिलु रिज़्क़हा अल्लाहु यर्ज़ुकुहा व इय्याकुम् वहुव स्समीउ़ल अ़लीम" (सूर-ए-अन्कबूत)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

"मा यफ्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रहमतिं फ़ला मुम्सिक लहा,वमा युम्सिक् फ़ला मुरसिल लहू मिम् बदिह , वहुवल् अज़ीज़ुल् हकीम"

(सूर-ए-फातिर)

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम

वलइन् सअल्तहुम् मन् ख़लक़ स्समावाति वल् अर्ज़ लयकूलुन्नल्लाह,कुल् अफरऐतुम् मा तदऊन मिन् दूनिल्लाहि,इन् अरादनियल्लाहु बिज़ुर्रिं हल् हुन्न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही,औ अरादनी बिरहमतिन् हल् हुन्न मुम्सिकातु रहमतिही,कुल् हस्बियल्लाहु,अ़लैहि यतवक्कलुल् मुतवक्किलून"

(सूर-ए-ज़ुमर) (आमाले कुरआनी)

हर मुसीबत से मुकम्मल हिफाज़त

(दुआए हज़रत अबू दर्दा रज़ि.)

एक शख्स ने हज़रत अबू दर्दा रज़ि.को ये इत्तेलाअ दी के आप का मकान जल गया।उन्हों ने कहा नहीं जला।फिर दूसरा शख्स आया और उसने भी यही ख़बर दी।हज़रत अबू दर्दा रज़ि. ने कहा ऐसा नहीं हो सकता।तीसरे शख्स ने आकर बतलाया के आग लगी और उसकी लपटें बुलंद हुई लेकिन जब आप के मकान तक पहुंची तो बुझ गई। इस पर हज़रत अबू दर्दा रज़ि.ने कहा मुझे मालूम था के अल्लाह पाक ऐसा नहीं करेगा।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि.ने फ़रमाया के इस की वजह ये है के मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है के जो शख्स सुबह को ये दुआ पढ़ ले तो शाम तक और शाम तक पढ़ ले तो सुबह तक किसी मुसीबत

और ह़ादसे में गिरफ्तार ना होगा।और मैंने वो दुआ़ पढ़ ली थी।

"अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह् इल्ला अन्त अ़लैक तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल् अ़र्शिल करीम मा शाअल्लाहु कान वमा लम् यशअ लम् यकुन,ला ह़ौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह्। अअ़्लमु अन्नल्लाह् अ़ला कुल्लि शैइं क़दीर।व अन्नल्ला क़द अह़ात बिकुल्लि शैइं इ़ल्मा। अल्लाहुम्म इन्नी आऊज़ु बिक मिन् शर्रि नफ़्सी व मिन् शर्रि कुल्लि दाब्बतिन् अन्त आ़ख़िज़ुम् बिना़सियतिहा इन्न रब्बी अ़ला स़िरातिम् मुस्तक़ीम"

(अद्दुआ़ लित्तबरानी)

मुसी़बत से बचे रहने की दुआ़

ह़ज़रत उ़मर रज़ि.रसूलुल्लाह् स़ल्लल्लाहु अ़लैही व सल्लम से रिवायत करते हैं के जो इन्सान किसी को मुसीबत में मुब्तला देख कर ये दुआ़ पढ़ लेगा तो पूरी ज़िन्दगी उस मुसी़बत से बचा रहेगा, बहुत मुजर्रब है।

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफानी मिम्मब्तलाक

बिही व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिम् मिम्मन ख़लक़ तफ्ज़ीला" (तिर्मिज़ी)

नोटः ये दुआ आहिस्ता से पढ़े ताके जिस को देख कर पढ़ा है वो ना सुन सके।

मुहलिक मर्ज़ और किसी भी बड़ी बीमारी से बचने की दुआ

"अल्लाहुम्म इन्नी आऊज़ु बिक मिनल् बरसि वल् जुज़ामि वल्जुनूनि व मिन् सय्यीइल् अस्क़ाम" (अबू दावूद)

किसी मुहलिक मर्ज़ से हिफ़ाज़त के लिए इस दुआ का पढ़ना मुफ़ीद है।कोई वबाई बीमारी फैले तो इस दुआ को सुबह शाम तीन-तीन बार पढ़ें, बच्चों को दम करें या लिख कर उनके गले में डाल दें।

चार मुहलिक बीमारियों से हिफ़ाज़त

"सुब्हानल्लाहिल् अज़ीमि वबिहम्दिही वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" हदीसे पाक का मफ़हूम है के इस दुआ को फज्र की नमाज़ के बाद चार बार पढ़ लिया जाए तो चार

बीमारयों:पागलपन,जुज़ाम,कोढ़ और फालिज से हिफाज़त होगी,बाज़ रिवायात में कोढ़ की जगह अंधेपन का ज़िक्र आया हैं। (इब्नुस्सुन्नी)

बीमारी तंगदस्ती और गुरबत ख़त्म

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि.रेवायत करते हैं के एक रोज़ मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ बाहर निकला इस तरह के मेरा हाथ आप के हाथ में था,आप सल्लल्लाहू अ़लैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा तुम्हारा ये हाल कैसे हो गया?उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया के बीमारी और तंग दस्ती ने मेरा ये हाल कर दिया है।आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैं तुम्हें चंद कलिमात बताता हूँ वो पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंग दस्ती जाती रहेगी। वो कलिमात ये हैं:

"तवक्कल्तु अ़लल् हय्यिल्लज़ी ला यमूतु, अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् वलदं व्वलम् यकुल्लहू शरीकुं फिल् मुल्कि वलम् यकुल्लहू

वलिय्युम् मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तक्बीरा"

(मुस्नदे अबी यअ्ला)

क़र्ज़ में गिरफ्तार हो तो

हदीस शरीफ का मफ़हूम है के जो शख़्स इस दुआ को माँगा करेगा उसकी परेशानियाँ भी दूर होंगी और क़र्ज़ की मुसीबत से भी नजात मिलेगी। (तफ़सीरे मज़हरी,मआरिफुल कुरआन)

"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् हम्मी वल् हुज़्नि व अऊज़ु बिक मिनल् अजज़ि वल् कस्लि व अऊज़ु बिक मिनल् जुब्नि वल् बुख़्लि व अऊज़ु बिक मिन् ग़लबतिद्दैनि व क़हरिर्रिजाल"

जेल से रिहाई के लिए

सुरह फातिहा एक सौ ग्यारह मर्तबा पढ़ कर बेड़ी या हथकड़ी पर दम करने से कैदी जल्दी रिहाई पाये। आख़री शब् में पढ़ने से बे मशक्क़त रोज़ी मिले। (आमाले कुरआनी)

बे चैनी व बे सुकूनी दूर करने की दुआ

हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस रज़ि.को रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने ये दुआ सिखाई थी और फ़रमाया था के बे चैनी और परेशानी के वक़्त ये दुआ माँगा करे। "अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शैआ"   (अमलुल यौमी बल्लैलह)

ख़ौफ की हालत में दिल का सुकून

हज़रत जाफर बिन सादिक रह.फरमाते है:मुझे तअज्जुब है उस शख़्स पर जिस को किसी चीज़ का ख़ौफ हो और फिर भी वो "हस्बुनल्लाहु व निअ्मल् वकील"से गाफिल रहे।

(सीरते इमामे सादिक़)

दुनिया में इन्सान पर ख़ौफ व परेशानी के हालात आते रहते हैं,मगर हालात में मुब्तला होने के बावजूद दिल का मुत्मइन होना अल्लाह पर कामिल यकीन और मुकम्मल भरोसे की वजह से होता है।

ख़ौफ व परेशानी की हालत में जब कोई आदमी ये दुआ इस यकीन के साथ पढ़ता है के वाक़ई अल्लाह पाक उसकी परेशानियों को दूर करने और ख़ौफ से नजात देने के लिए काफ़ी है

तो संगीन से संगीन हालात भी उसके दिल में बेचैनी पैदा नहीं करते।

ग़मों को ख़ुशी से बदलिए

हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:किसी को कोई ग़म या परेशानी या फ़िक्र लाहिक़ हो तो ये दुआ पढ़ा करें,अल्लाह तआ़ला उसकी बरकत से ना सिर्फ उसकी परेशानी दूर फरमा देंगे ,बल्के उसके ग़मों को मसर्रत व ख़ुशी में तब्दील फ़रमा देंगे।

स़हाबा-ए-किराम रज़ि.ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम लोग उसे याद ना कर लें? हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: हाँ तुम भी इसको याद कर लो और तुम्हारे अ़लावा जो भी इसको सुने उसको भी चाहिए के इस दुआ को याद कर लें।

“अल्लाहुम्म इन्नी अ़ब्दुक वब्नु अ़ब्दिक वब्नु अमतिक नास़ियती बियदिक माज़िं फिय्य हुक्मुक अ़दलुं फिय्य क़ज़ाउक अस्अलुक बिकुल्लि इस्मिं हुव लक सम्मैत बिही नफ्सक औ

अन्ज़ल्तहू फ़ी किताबिक औ अ़ल्लम्तहू अह़दम् मिन ख़ल्क़िक अविस्तअ्सर्त बिही फ़ी इ़ल्मिल् ग़ैबि इ़न्दक अन् तजअ़लल् कुरआन रबीअ़ क़ल्बी व नूर स़दरी व जलाअ हुज़्नी व ज़हाब हम्मी "

हर मुसीबत से नजात की दुआ़

हज़रत अबू हुरैरा रजि.रेवायत करते हैं के रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया "ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह" निन्नान्वे बीमारियों की दवा है ,जिनमें सबसे कमतर ग़म है।

ग़म ओ परेशानी को दूर करने वाली दुआ

हज़रत अनस रज़ि . से मरवी है के आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ये दुआ़ फरमाते थे। "अल्लाहुम्म ला सहल इल्ला मा जअ़ल्तहू सह्ला व अन्त तज्अ़लुल् हुज़न सहलन् इज़ा शिअ्त"

(इब्ने सुन्नी)

हर चीज़ के नुक्स़ान से बचने की दुआ़

हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ्फान रज़ि. रिवायत करते हैं के हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ने इर्शाद फ़रमाया:जो बंदा हर रोज़ सुबह शाम तीन मर्तबा ये दुआ पढ़ लिया करे तो उसको हरगिज़ कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। "बिस्मिल्लाहिल्लजी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शैउन फिल्अर्जि वला फिस्समाइ वहुवस्समीउल् अलीम" (तिर्मिज़ी)

हसद करनेवाले के शर से हिफाज़त

"कुल इन्नल् फ़ज़्ल बियदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहू वासिउन अलीम,यख़्तस्सु बि रहमतिही मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फज़्लिल् अज़ीम" (सूर-ए-आले इमरान) फज्र और मग़रिब की नमाज़ के बाद तीन मर्तबा ये दुआ पढ़कर दोनों हाथों पर दम करके पूरे जिस्म पर फेर लें।इन शाअल्लाह हासिदीन के शर से मुकम्मल हिफाज़त होगी।

(गंजीना-ए-असरार,अल्लामा कश्मीरी स.२६)

जब दुश्मन का ख़ौफ हो तो ये दुआ पढ़े

"अल्लाहुम्म इन्ना नजअलुक फ़ी नुहूरिहीम व नऊज़ु बिक मिन् शुरूरिहीम" (अबू दावूद)

जब किसी जानी या माली दुश्मन का ख़ौफ हो तो इस दुआ की कसरत करनी चाहिए,ख़ौफ दूर हो जाएगा।

दुश्मन के सामने पढने की दुआ

हज़रत अबू राफेअ रज़ि.रिवायत करते हैं के हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि.ने(मजबूर होकर)हज्जाज बिन यूसुफ से अपनी बेटी की शादी तो कर दी;मगर बेटी से कहा के जब वो तुम्हारे पास तन्हाई में आये तो ये दुआ पढ़ना:- "ला इलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीम सुब्हानल्लाहि रब्बिल् अर्शिल् अज़ीम वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन" रावी कहते के(हज़रत अब्दुल्लाह की बेटी ने ये दुआ पढ़ी,जिस की वजह से हज्जाज उसके क़रीब ना आ सका)। (कन्ज़ुल उम्माल)

दुश्मन के घेरे में भी हिफाज़त

ईमान वाला सिर्फ अल्लाह से डरता और गुनाहों से भागता है।कभी हालात ऐसे हों के ईमान वाला दुश्मन के घेरे में फंस जाए तो घबराने के बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की बतलाई हुई इस दुआ को पढ़े। इन शाअल्लाह खुदाई मदद का करिश्मा देखेगा। वाज़ेह रहे के दुआ तजरबे के इरादे से नहीं,बल्के अल्लाह की ज़ात पर पूरे यक़ीन और कामिल ऐतेमाद के साथ पढ़ी जाए:"अल्लाहुम्मस्तुर औरातिना व आमिन् रौआतिना" (हिस्ने हुसीन)

पूरे दिन ज़हरीली चीज़ों से हिफाज़त

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि.से रेवायत है के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख्स सुबह शाम तीन मर्तबा "अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहि त्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़"पढ़ ले तो उस रात उसको किसी (ज़हरीली चीज़) के डसने से कोई नुक़्सान नहीं होगा।और ना ही उस दिन में उसको कोई नुक़्सान होगा। (इब्ने माजा)

ऍक्सिडेंट से हिफाज़त

सवारी की दुआ "सुब्हानल्लज़ी सख्ख़र लना अखीर तक"के बाद ये दो आयतें पढ़ ली जाएं तो बुजुर्गों का तजरबा है के ऍक्सिडेंट से

मुकम्मल हिफ़ाज़त होती है। "इन्न वलिय्यि यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल् किताब वहुव यतवल्ल-स्सालिहीन" (सूर-ए-एअराफ)

"वमा क़दरुल्लाह हक्क क़द्रिही वलअर्जु जमीअं क़ब्ज़तुहू यौमल् कियामती व स्समावातु मत्विय्यातुम् बि यमीनिही सुब्हानहु व तआला अम्मा युशरिकून" (सूर- ए- ज़ुमर)

मच्छरों से हिफ़ाज़त का अमल

अगर मच्छरों की कसरत हो तो ये आयत सात मर्तबा पानी पर दम करके चारपाई के चारों तरफ छिड़क दें तो इन शाअल्लाह मच्छर परेशान नहीं करेंगे। "वमा लना अल्ला नतवक्कल अलल्लाहि वक़द् हदाना सुबुलना वलनस्बिरन्न अला मा आज़ैतुमूना व अलल्लाहि फल्यतवक्किलिल् मूतवक्किलून"

(गंजीना-ए- असरार,अल्लामा कश्मीरी,स,५१)

नींद में डरावने ख़्वाब से हिफ़ाज़त

"अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहि त्ताम्माति मिन् ग़ज़बिही व इक़ाबिही व शर्रि इबादिही व मिन हमज़ाति श्शयातीनि व अंय्यहज़ुरून" (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि.अपने समझदार बच्चों को तो लफ्जं (जैसे के वैसे) याद कराया करते थे और (लिखकर) नासमझ बच्चों के गले में डाल दिया करते थे।

(हिस्ने हसीन)

बुरा ख़्वाब देखे तो क्या करें

अगर कोई बुरा ख़्वाब देखे तो अपने बाएं जानिब थुत्कार दें या थूक दे या फूँक मार दे और तीन मर्तबा "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानि र्रजीम"पढ़े और उसका ज़िक्र ना करें।

(हिस्ने हसीन)

बुरे ख़्वाब से बचने के लिए

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक रुअ्यन सालिहतन् ,सादिक़तन् गैर काज़िबतिन् नाफिअतिन् गैर ज़ार्रतिन्"

(इब्ने सुन्नी)

सोने से क़ब्ल इस दुआ के एहतेमाम से बुरे ख़्वाब से हिफाज़त होगी।

सेह्र, नज़र, आसेब, जादू वग़ैरा की दुआएं

ह्र तरह् के अस़रात का वाहिद इ़लाज

मेरी एक मुख़्तस़र सी किताब "अ़मल कम नफ़ा ज़्यादा" से लोगों को बहुत फ़ायदा पहुंचा और पहुंच रहा है। आसेबी अमराज़ और हर तरह् के जादू,कर्तब,शैतान और ख़बीस़ जिन्नात के अस़रात को दूर करने और उनसे ह़िफाज़त के लिए उसकी दुआ़ओं को मामूल बनाना बेह्द नाफेअ़ है।

नीचे चंद आमाल भी लिखे जाते हैं।जिस के एह्तेमाम से इन शाअल्लाह ह्र तरह् के सेह्र व आसेब से ह़िफाज़त होगी।

जादू ,सेह्र वग़ैरह् से ह़िफाज़त की दुआ़

ह्ज़रत काब बिन अह्बार फ़रमाते है के अगर मै ये दुआ ना पढ़ता तो यहूदी मुझे गधा बना देते:

अऊज़ु बिवज्हिल्लाहिल अजीमि, अल्लज़ी

लैस शैउं अअ्ज़म मिन्हु व बिकलिमातिल्लाहि त्ताम्मति ल्लती ला युजाविज़ुहुन्न बर्रुव्वला फाजिरुं व बिअस्माइल्लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा अ़लिम्तु मिन्हा वमा लम् अअ्लम मिन् शर्रि मा ख़लक़ व बरअ व ज़रअ" (मुअत्ता इमामे मालिक)

सुबह़ शाम इस दुआ़ का एहतेमाम जादू और तमाम मख्लूक़ के शर से ह़िफाज़त के लिए मुफ़ीद व मुजर्रब है।

नज़रे बद दूर करने की एक ख़ास़ दुआ़

हज़रत जिब्रिल अ़लै.ने नज़रे बद दूर करने का एक ख़ास़ वज़ीफा हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सिखाया और फ़रमाया के इसे पढ़ कर(ह़ज़रत)ह़सन और (ह़ज़रत)हुसैन रज़ि.पर दम किया करें:वो कलिमात ये हैं: "अल्लाहुम्म ज़स्सुल्तानिल् अज़ीमि ज़ल्मन्निल क़दीमि ज़ल्वज्हिल् करीमि वलिय्यल् कलिमाति त्ताम्माति व द्दअ़वातिल् मुस्तजाबाति आ़फिल् ह़सन वल् हुसैन मिन् अन्फुसिल् जिन्नि व अअ्यूनिल् इन्स" हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ये दुआ़

पढ़ी तो दोनों बच्चे उठ खड़े हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खेलने कूदने लगे।हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया लोगो!अपनी जानों, अपनी बीवियों और अपनी औलाद को इस दुआ के साथ पनाह दिया करो,इस जैसी कोई और दुआ पनाह की नहीं। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

(नोट:जब ये दुआ पढ़े तो अलहसन वलहुसैन की जगह अपने बच्चों के नाम लेकर दुआ पूरी करें)

जिन्न,भूत प्रेत के असर से होने वाली बेहोशी दूर करने का अमल

अगर जिन्नात,ख़बीस,शैतान या भूत प्रेत की वजह से बेहोशी तारी हुई हो तो इन आयात को पढ़ कर उसके कान में दम करें।

(अद्दअ्वातुल कबीर)

"अफहसिब्तुम अन्नमा ख़लक़नाकुम् अबसंव्व अन्कुम् इलैना ला तुरजऊन फतआलल्लाहुल् मलिकुल् हक़्कु ला इलाह इल्ला हुव रब्बुल् अर्शिल् करीम वमंय्यदउ मअल्लाहि इलाहन

आख़र ला बुरहान लहू बिही इन्द रब्बिही इन्नहू ला युफ्लिहुल् काफ़िरून व कुर्रब्बिग्फ़िर वहूम व अन्त ख़ैरुर्राहिमीन अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतुं व्वला नौम। लहू मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़। मन् ज़ल्लज़ी यशफ़उ इन्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ्लमु मा बैन ऐदीहिम वमा ख़ल्फ़हुम् वला युहीतून बिशैइम् मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ,वसीअ कुर्सिय्युहु स्समावाति वल्अर्ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहुवल् अलिय्युल् अज़ीम''

शैतानी वसवसा दूर करने के लिए

"रब्बि अऊज़ु बिक मिन् हमज़ाति श्शयातीनि व अऊज़ु बिक रब्बि अंय्यहज़ुरून"(सूर-ए-मुअ्मिनून) जिस के दिल में वसवसा-ए-शैतानी बकसरत पैदा होते हों वो इसको बकसरत पढ़ा करे, इन शाअल्लाह उन वसवसों से महफ़ूज़ रहेगा।

(आमाले कुरआनी,स.१०)

चौथा ह़िस्सा

जिस्मानी बीमारियों का इ़लाज

रोज़ेदार को कुव्वत ह़ा़सिल हो

"अल मुकी़तु"

(अल्लाह् पाक का सि़फाती नाम है)

अगर रोज़ेदार इसको मिट्टी पर पढ़ कर या लिख कर उसको भिगोकर सूंघे तो कुव्वत और ग़िजा़इयत ह़ा़सिल होगी। यानी भूक की शिद्दत कम हो जाएगी। (आमाले कुरआनी)

मौत के अ़लावा ह़र मर्ज़ से शिफा

ह़दीसे पाक में है के मरीज़ कि इयादत के वक़्त सात मर्तबा इस दुआ़ को पढ़ा जाए तो मौत के अलावा ह़र बीमारी से शिफ़ा मिलेगी : "असअलुल्लाह़ल अजीमि रब्बल अर्शिलअजीमि अंय्यशफियक" (अबू दाबूद)

नोट:मरीज़ अगर सामने मौजूद हो तो दुआ का आख़री लफ्ज़ अंय्यशिफयक कहना चाहिए।(जैसा के दुआ में लिखा गया है) और अगर पास ना हो तो "अंय्यशिफयहू" पढ़े और अगर ख़ुद के लिए पढ़े तो अंय्यशिफयनी कहे।और अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी कहना हो तो "अंय्यशिफ़यना" कहना चाहिए।

बुख़ार का इ़लाज

"बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक़,वल्लाहु यश्फीक, मिन् कुल्लि दाइं युअ्ज़ीक,व मिन् कुल्लि नफ्सिं हा़सिदति व तर्फति ऐ़निं वल्लाहु यश्फीक"

(इब्ने सुन्नी)

नोट:बुख़ार ऐसा मर्ज़ है के बहुत कम लोग ही उससे बच पाते हैं।अल्लाह के हबीब स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी इस मर्ज़ में मुब्तला हुए और उसका इ़लाज भी सिखाया।मज़्कूरा दुआ को पढ़ते रहना इस मर्ज़ में बहुत नफा देता है।नीज़ नीम गरम पानी से गुस्ल करने के बाद ठंडा पानी पैरों पर डालना भी बुख़ार दूर करने के लिए मुफ़ीद व मुजर्रब और ह़दीस़ से साबित है।

बुख़ार और हर तरह के दर्द का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि.से मरवी है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ,सहाबा-ए-किराम को बुख़ार और हर तरह के दर्द के लिए ये दुआ तालीम फरमाते थे: "बिस्मिल्लाहिल् क्बीर अऊज़ु बिल्लाहिल् अज़ीमि मिन् शर्रि कुल्लि इर्किन्नअ्आरि मिन् शर्रि हर्रिन्नार"

(सुनने तिर्मिज़ी)

सरदर्द एक आम बीमारी है उसकी मुख़्तलिफ़ वुजूहात हैं। वजह चाहे जो भी हो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बतलाई हुई इस दुआ को पढ़ने से शिफ़ा हासिल होगी।

दिमाग़ की कमज़ोरी दूर करने के लिए

दिमाग़ की कमज़ोरी रोज़ ब रोज़ बढ़ती जा रही है,दिमाग़ की कमजोरी दूर करने के वास्ते इस आयत को रोज़ाना बाद नमाज़े फज्र दस मर्तबा पढ़ कर हथेली पर दम करके सर पर फेरना मुफीद है: "फ़फ़ह्हम्नाहा सुलैमान व कुल्लन आतैना हुक्मंव्व इल्मा व सख्खरना मअ

दावूदल जिबाल वत्तैर व कुन्ना फाइलीन"

(गंजीना-ए-असरार, स १०९)

निसयान (भूलने की बीमारी) का इ़लाज

निसयान(भूलने की बीमारी) को दूर करने के लिए ये आयत बाद नमाज़े इ़शा सोते वक़्त ग्यारह् मर्तबा पढ़ी जाए, खुदा के हुक्म से फायदा होता है।

"क़ालू सुब्हानक ला इ़ल्म लना इल्ला मा अ़ल्लमतना इन्नक अन्तल् अ़लीमुल् ह़कीम।

(गंजीना-ए-असरार, स १०९)

नींद ना आने का इ़लाज

ह़ज़रत खा़लिद बिन वलीद मख्जूमी रज़ि.की नींद उचट जाती थी तो उन्हों ने अल्लाह् के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शिकायत की। अल्लाह् के रसूल स़ल्लल्लाहू अ़लैहि व सल्लम ने ये दुआ़ तालीम फ़रमाई।

"अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति स्सबइ़ वमा अज़ल्लत व रब्बल अर्ज़ीन वमा अक़ल्लत व

रब्बिशशयातीनि वमा अज़ल्लत कुन ली जारम् मिन शर्रि खल्क़िक कुल्लिहिम जमीअन् अय्यफ़्रुत अलय्य अहदुम् मिन्हुम औ अंय्यब्ग़िय,अज़्ज़ जारुक व जल्ल सनाउक व ला इलाह ग़ैरुक ला इलाह इल्ला अन्त" (तिर्मिज़ी)

आँख की रोशनी तेज़ हो जाए

सूर ए क़द्र

"इन्ना अन्ज़ल्नाहू फ़ी लैलतिल क़द्रि वमा अदराक मा लैलतुल क़द्रि लैलतुल कद्रि ख़ैरुम् मिन अल्फ़ि शहर तनज़्ज़लुल मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बिइज़्नी रब्बिहीम् मिन कुल्लि अम्रि सलामुन् हिय हत्ता मत्लइल फज्रि"

दरुदे इब्राहीमी

"अल्लाहुम्म सल्ली अ़ला मुहम्मद व अ़ला आलि मुहम्मद कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम् मजीद"

नमाज़े फज्र की सुन्नत और फ़र्ज़ के दरमियान ७ मर्तबा सूरतुल क़द्र (इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल कद्रि) अव्वल व आख़िर

दरुदे इब्राहीमी पढ़े इकतालीस दिन तक लगातार ये अमल करें। नाग़ा होने की सूरत में दोबारा शुरू करे।

नीज़ सुबह् को नहार मुँह आँखों में मुँकि राल काजल की तरह् लगाना भी आँखों के लिए बहुत मुफ़ीद और कई बीमारियों के लिए शिफ़ाबख्श इ़लाज है।

नज़ला जुकाम(सर्दी) से छुटकारा

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़ल अ़ला अ़ब्दिहिल् किताब वलम् यज्अ़ल्लहू इ़वजा " या सूर-ए-फातेहा तीन बार पढ़ कर दम कर दिया जाए। इन शाअल्लाह् फाएदा होगा।

(गंजीना- ए- असरार)

मुंह के छालों का इ़लाज

"सूरतु ज़्ज़ुहा" इकतालीस बार चीनी पर दम करके चबाने से इन शाअल्लाह् तमाम फुंसियाँ और छाले ख़त्म हो जाएंगे।

(अ़मलिय्याते कश्मीरी)

दांत का दर्द ख़त्म हो जाए

इमाम बैहक़ी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि.से नक़ल करते हैं के उन्हों ने अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दांतों के दर्द की शिकायत की,तो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपना हाथ दर्द की तरफ़ उनके रुख़सार पर रखा और ये दुआ सात मर्तबा पढ़ी:

"अल्लाहुम्म अज़्हिब अ़न्हु सू- अ मा यजिदु व फ़ुह्शहू बिदअ़्वति नबिय्यिकल् मुबारकिल् मकीनि इ़न्दक" (बैहक़ी)

और हाथ उठाने से पहले ही दर्द ख़त्म हो गया।

दिल की तक्लीफ दूर कीजिए

हर नमाज़ के बाद और जब भी तक्लीफ़ हो तो दिल पर दायाँ हाथ रख कर ग्यारह(११)बार पढ़े: "या अल्लाहु क़ब्बिनी व क़ल्बी"

(ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत,२११)

ब्लडप्रेशर के लिए

हर तरह के ब्लड प्रेशर के लिए नीचे दी गयीं आयतें हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तीन मर्तबा पढ़ें। इन शाअल्लाह फाएदा होगा।

"अल्लज़ीन आमनू व तत्मइन्नु कुलूबुहुम् बि ज़िक्रिल्लाहि अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल् कुलूब।अल्लज़ीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब"

(सूर-ए-रअ़द)

गुस्सा दूर करने के लिए

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़एशा रज़ि को ग़ुस्से के वक़्त ये दुआ़ पढने कि तल्क़ीन फ़रमाई:अल्लाहुम्म रब्ब मुहम्मदिं इग़्फ़िर्ली ज़ंबी व अज़्हिब ग़ैज़ क़ल्बी व अजिर्नी मिम्मुज़िल्लातिल फ़ितनि

(अमलुल यौमि वल्लैलह)

गुस्सा ख़्वाह मर्द को आए या औ़रत को ,ये दुआ़ पढ़ ली जाए तो इन शाअल्लाह गुस्सा दूर हो जाएगा।

वमा अर्सलनाक इल्ला मुबश्शिरंव्व नज़ीरा"
सात मर्तबा ये पढ़े।

यरक़ान (पीलिया,जॉंडिस)का इ़लाज

एक सौ एक बार ये आयत पानी पर दम करके पिलाना यरक़ान के लिए मुफ़ीद और मुजर्रब है। "सब्बह़ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल्अर्ज़ि वहुवल् अज़ीज़ुल् ह़कीम"

(गंजीना-ए-असरार)

पेशाब की बंदिश का इ़लाज

अगर पेशाब का आना बंद हो गया हो तो ये आयत इकहत्तर(71)मर्तबा पानी पर दम करके पिलाएं,इन शाअल्लाह पेशाब जारी हो जाएगा। बहुत मुजर्रब है। "व इज़स्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़कुल्नज़रिब्बि अ़साकल् ह़जर,फन्फजरत मिन्हु -स्नता अ़शरत ऐ़ना, क़द अ़लिम कुल्लु उनासिम् मशरबहुम,कुलू वशरबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि वला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ्सिदीन"

(गंजीना-ए-असरार)

पेशाब की ज़्यादती का इलाज और बच्चों के बिस्तर पर पेशाब करने का इलाज

सूरह फातेहा इक्कीस(21)मर्तबा तिलों पर दम करके ग्यारह दिन तक खिलाया जाए।इन शाअल्लाह कसरते पेशाब का मर्ज़ ख़त्म हो जाएगा।

(गंजीना-ए-असरार)

नोट:तिल ख्वाह सुफेद हो या सियाह दोनों तरह के तिल मिला लें तो ज़्यादा बेहतर है। बिस्तर पर पेशाब करनेवाले बच्चों के लिए भी ये अमल मुफ़ीद है। अलबत्ता तिलों की मिक्दार बड़ों और बच्चों के एतेबार से अलग अलग होगी।

गुर्दे और पित्ते की पथरी निकल जाए

गुर्दे और पित्ते की पथरी दूर करने के लिए इस आयत को इकतालीस बार पढ़ कर पानी पर दम करके उस वक़्त तक पिलाए जब तक कामियाबी ना हो। "व इन्न मिनल् हिजारति लमा यतफज्जरु मिन्हुल् अन्हारु,व इन्न मिन्हा लमा यश्शक्ककु फयख्रुजु मिन्हुल् माअ, व इन्न

मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्ला वमल्लाहु बिग़ाफ़िलिं अ़म्मा तअ़्मलून"

(सूर-ए-बक़रह)

मर्दानगी की कुव्वत के लिए

"या क़विय्यु या मतीनु"

अल्लाह तआ़ला से जिन लोगों का तअ़ल्लुक़ मज़बूत होता है,वो अपनी हर छोटी बड़ी ज़रूरत का सवाल अल्लाह ही से करते हैं। रिवायत में है के अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने स़हाबा को अल्लाह से मांगने की ताकीद करते हुए फ़रमाया के अगर जूते का तस्मा भी टूट जाए तो अल्लाह से माँगा करो।चुनांचे अल्लाह वाले अपनी दुआ़ओं में अल्लाह के सामने अपनी ऐसी-ऐसी ज़रूरतें पेश करतें हैं के आ़म इन्सान ये तस़व्वुर भी नहीं करता के ये भी कोई अल्लाह से मांगने की चीज़ है।

एक अल्लाह वाले फ़रमाते है के मै ये भी दुआ़ करता हूँ के ऐ अल्लाह!मेरी अहलिया

की वो मख्सूस ज़रूरत जिस का पूरा करना मेरा फ़र्ज़ और उसका हक़ है।उसके लिए मुझे कुव्वत भी दीजिए और उस फ़र्ज़ की अदाईगी का अह्सन तरीक़ा मुझे सिखा दीजिए।बहर हाल मर्दानगी की कुव्वत के लिए"या क़विय्यु या मतीनु"एक सौ तैंतीस (१३३) बार पढ़ना मुफीद व मुजर्रब है।

जरयान का आसान इ़लाज

असर की नमाज़ के बाद अव्वल आख़िर सात मर्तबा दरूद शरीफ और सौ बार ये आयत पढ़ना जरयान के लिए बहुत मुफीद है।"रब्बना अत्मिम् लना नूरना व ग़्फिरलना इन्नक अ़ला कुल्लि शैइं क़दीर"

(गंजीना-ए-असरार)

कस़रते एह्तेलाम का खा़त्मा

बिस्तर पर जाते वक़्त सुरह तारिक़ पढ़ लिया जाए तो कस़रते एह्तेलाम का मर्ज़ नहीं होगा और अगर पहले से हो तो बिल्कुल ख़त्म हो जाएगा।

(गंजीना-ए-असरार)

सैलानु रॅहूम(लिकोरिया)के लिए

सैलानु रॅहूम की बीमारी हो गई हो तो तीन मर्तबा ये आयत अ़र्के़ गुलाब पर दम करके इकतालीस रोज़ तक पिलाई जाए।इन शाअल्लाह मर्ज़ जाता रहेगा। "व यश्फि सुदूर क़ौमिम् मुअ्मिनीन व नुनज़्ज़िलु मिनल् कुरआनि मा हुव शिफा,बिहूक़्क़ि इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्तई़न" (गंजीना-ए -असरार)

बे औलाद वालों की औलाद हो जाए

१)"वस्समाअ बनैनाहा बिऐदिंव्व इन्ना लमूसि-ऊन

२) वल्अर्ज़ फरशनाहा फनिअ्मल् माहिदून"

हूज़रत हूसन बसरी रहू.ने फ़रमाया अगर मियाँ बीवी उबले हुवे दो अंडे लें और छिलके उतार कर एक पर पहली आयत लिख कर मर्द खाए और दुसरे अंडे पर दूसरी आयत लिखे और बीवी खाए,फिर हूम बिस्तरी करे तो इन शाअल्लाह जिमाअ़ पर कुदरत होगी और हूमल ठहर जाएगा। ये अ़मल चालीस रोज़ तक किया जाए। (गंजीना-ए-असरार,स.६५)

नोट:अंडे खाने का अमल चालीस रोज़ तक करना है। और जिमाअ़ के मुतअ़ल्लिक़ जितने वक़्फ़े का मामूल हो वैसा ही करें।

नाफ़ टल जाए तो

"इन्नल्लाह युम्सिकू स्समावाति वल्अर्ज़ अन् तज़ूला व-ल-इन् ज़ा-ल-ता इन् अम्सकहुमा मिन् अह़दिम् मिम बादिही,इन्नहू कान ह़लीमन् ग़फ़ूरा" इस आयत को लिख कर पेट पर बांध दे तो नाफ़ अपनी जगह पर आ जाएगी और अगर बंधा रहने दो तो नाफ़ ना टलेगी।

(ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत,२२२)

बवासीर का आसान इ़लाज

इकतालीस दिन तक रोज़ाना सात सौ मर्तबा इस्मे बारी तआ़ला"या मालिकु"का पढना बवासीर के लिए बहुत नाफेअ़ है। (गंजीना)

एलर्जी और हर क़िस्म के दानों का इ़लाज

बाज़ अज़्वाजे मुतह्हरात से रिवायत है के रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक

दिन मेरे पास तशरीफ़ लाए,उस वक़्त मेरी ऊँगली में दाना निकला हुआ था। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया के तुम्हारे पास ज़ुरैरा है(ज़ुरैरा एक दवाई का नाम है) मैने कहा के हाँ है। आप स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया के उसपर लगा और ये कहो। "अल्लाहुम्म मुस़ग्गिरल् कबीर व मुकब्बिर स्स़गीर स़ग्गिर मआबी" (इब्ने सुन्नी)

जल जाने का इ़लाज

"अजहिबिल् बअ्स रब्बन्नासि, इश्फी अन्त श्शाफी,ला शाफीय इल्ला अन्त"

(मुअ्जमुल कबीर)

घरों में जलने कटने का वाक़ेऐ पेश आते रहते है।तेल,मरहम या कोई और दवा लगाने के साथ ये दुआ भी बार बार पढ़ी जाए तो बहुत जल्द शिफ़ा भी हास़िल होगी और स़वाब भी मिलेगा।

ला इ़लाज बीमारी और ज़ालिम के ज़ुल्म से नजात पाने का बेहतरीन नुस्ख़ा

फ़दआ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुं फ़ंतसिर (सूर-ए-क़मर)

अगर कोई ऐसी बीमारी में मुब्तला हो के डॉक्टर की समझ से बाहर हो और कोई दवा असर ना करती हो या किसी ज़ालिम का ज़ुल्म इन्तेहा को पहुंच चूका हो तो रोज़ाना तीन सौ तेरा मर्तबा मज़्कूरा आयत पढ़कर आस्मान की तरफ़ फूंके और मरीज़ को पानी पर दम करके पिलाए। ये अमल इक्कीस रोज़ तक करें इन शाअल्लाह बहुत जल्द नफ़ा होगा।

(माख़ूज़ अज़ सहमाही हकीमुल उम्मत)

मरते दम तक सही- सलामत रहने का नुस्ख़ा

"फ़अक़िम वज्हक लिद्दीनि हनीफ़ा फित्रतल्लाहि ल्लती फ़तरन्नास अलैहा ला तब्दील लिख़ल्कि ल्लाह ज़ालिक द्दीनुल क़य्यिमु वलाकिन्न अक्सर न्नासि ला यअ्लमून"

(सूर-ए-रूम)

जो शख़्स चाहे के मरते दम तक उसके हाथ पावं और बदन के तमाम आज़ा तन्दुरुस्त रहें तो ये आयत रोज़ाना तीन मर्तबा पढ़कर अपने ऊपर दम करें।

(सहमाही हकीमुल उम्मत)

ख़त्म शुद